قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً
مِنْ طِينٍ ﴿٣٣﴾ مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾ فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾ فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا
غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾ وَفِي مُوسَىٰ إِذْ
أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ
فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا
جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٢﴾ وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ
الصَّاعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾ وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ
كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٤٦﴾

आयत नं० 31 से 46

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम पैग़म्बरी शान से समझ गये कि फ़रिशते किसी और ख़ास काम से भी आए हैं इसलिए उनसे) **कहने लगे** (कि) **अच्छा** (यह) **तो** (बताओ कि) **तुम को क्या ख़ास काम है ऐ फ़रिशतो(31) फ़रिशतों ने कहा कि हम एक मुजरिम क़ौम** (यानी क़ौमे लूत) **की तरफ़ भेजे गये हैं(32) ताकि हम उन पर कंकर के पत्थर बरसाएं(33) जिन पर आप के रब के पास से ख़ास निशानी भी है** (और वो) **हद से बढ़ जाने वालों के लिए** (है)**(34) फिर** (जब उन बस्तियों पर अज़ाब का वक़्त नज़दीक आया तो) **हमने जितने ईमान वाले थे सब को वहां से अलग कर दिया(35) सो सिवाए मुसलमानों के एक घर के और और कोई घर** (मुसलमानों का) **हमने नहीं पाया** (यानी वहां कोई और घर मुसलमानों का नहीं था)**(36) और हमने इस क़िस्से में** (सदा के लिए) **ऐसे लोगों के लिए** (नसीहत की) **निशानी रहने दी जो दर्दनाक अज़ाब से डरते रहें(37) और** (आगे मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन का क़िस्सा सुनो कि) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के क़िस्से में भी नसीहत का सामान है जब कि हमने उन को फ़िरऔन के पास एक खुली हुई दलील** (यानी मोजिज़ा) **देकर भेजा(38) तो उसने दरबारियों के साथ मुंह फेर लिया और कहने लगा कि यह जादूगर या दीवाना है(39) सो हमने उस को और उसकी फ़ौज को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया** (यानी डुबो दिया) **और उसने काम ही बुरा किया था(40) और** (आगे आद का क़िस्सा सुनो कि) **आद के क़िस्से में भी नसीहत** (का सामान) **है जब कि हम ने उन पर**

नामुबारक (यानी मिटा देने वाली) **आंधी भेजी(41)** (वो) **जिस चीज़ पर गुज़रती थी** (यानी जिस चीज़ के हलाक करने का हुक्म था) **उस को ऐसा कर छोड़ती थी जैसे कोई चीज़ गल कर चूरा-चूरा हो जाती है(42) और** (आगे समूद का क़िस्सा सुनो कि) **समूद के क़िस्से में** (भी) **नसीहत** (का सामान) **है जब कि उनसे कहा गया** (यानी सालिह अलैहिस्सलाम ने कहा कि) **और थोड़े दिनों चैन कर लो** (यानी कुफ़्र से बाज़ नहीं आओगे तो कुछ दिनों बाद हलाक होंगे)**(43) तो** (इस डराने पर भी) **उन लोगों ने अपने रब के हुक्म के मानने से इनकार किया तो उनको अज़ाब ने आपकड़ा और वो देखते रह गये(44) सो न तो खड़े ही हो सके** (बल्कि औंधे मुंह गिर गये) **और न** (हमसे) **बदला ले सके(45) और उनसे पहले नूह की क़ौम का ये ही हाल हो चुका था,** (यानी इस वजह से कि) **वो बड़े नाफ़रमान लोग** (थे वो भी हलाक किये गये) **थे(46)**

नोटः- क़ौमे लूत पर जो पत्थर बरसाए गये उन पर अल्लाह की तरफ़ से ख़ास निशानी लगी हुई थी बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि हर पत्थर पर उस आदमी का नाम लिखा हुआ था जिसको हलाक करने के लिए यह भेजा गया और वो जिस तरफ़ भागा उस पत्थर ने उस का पीछा किया।

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَیْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَیْنِ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّیْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿٥٠﴾ۚ وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّیْ لَكُمْ
مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿٥١﴾ۚ كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٥٢﴾ۚ اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ
بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٥٣﴾ۚ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾ وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿٥٥﴾

आयत नं० 47 से 55

और हमने आसमान को (अपनी) **क़ुदरत से बनाया और हम बड़ी क़ुदरत वाले हैं(47) और हमने ज़मीन को फ़र्श** (की तरह) **बनाया तो हम** (कैसे) **अच्छे बिछाने वाले** (हैं यानी उसमें कैसे-कैसे नफ़े रखते) **हैं(48) और हर चीज़ को दो क़िस्म का बनाया ताकि तुम** (इन चीज़ों से तौहीद को) **समझो(49) सो** (ऐ पैग़म्बर इन से कह दीजिए कि जब सब चीज़ों से साबित है कि बनाने वाला एक है तो तुम को चाहिए कि) **तुम अल्लाह ही की** (तौहीद की) **तरफ़ दौड़ो,** (और) **मैं** (भी)

तुम्हारे (समझाने के) **वास्ते अल्लाह की तरफ़ से साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला** (होकर आया) **हूं** (कि तौहीद का इनकार करने वालों को अज़ाब देगा)(50) **और** (फिर समझाता हूं कि) **अल्लाह के साथ कोई और माबूद न बनाओ, मैं तुम्हारे** (समझाने के) **वास्ते अल्लाह की तरफ़ से साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला** (होकर आया) **हूं**(51) (आगे हुज़ूर को तसल्ली है कि बेशक आप पैग़म्बर हैं और इनके झुटलाने और इनकार करने का ग़म न कीजिए क्योंकि) **इसी तरह जो** (काफ़िर) **लोग इनसे पहले हो चुके हैं उनके पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसको उन्होंने** (यानी सबने या कुछ ने) **जादूगर या दीवाना न कहा हो**(52) **क्या एक दूसरे को इस बात की वसीयत करते चले आए थे** (जो सबने एक सी बात कही) **बल्कि** (वजह इसके कहने कि यह हुई कि) **ये सब के सब सरकश** (और नाफ़रमान) **लोग हैं**(53) **तो** (जब पहले लोग भी ऐसे हुए हैं तो) **आप इनकी तरफ़ ध्यान न** (कीजिए यानी इनके झुटलाने की परवाह और ग़म न) **कीजिए क्योंकि आप पर किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं**(54) **और** (तसल्ली से अपने काम में लगे रहिए और) **समझाते रहिए क्योंकि समझाना ईमान** (लाने) **वालों को** (भी और जो पहले से मोमिन हैं उनको भी) **नफ़ा देता है**(55)।

नोटः- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह की तरफ़ दौड़ने से मुराद यह है कि अपने गुनाहों से भागो अल्लाह की तरफ़ तौबा करके। और हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने फ़रमाया नफ़्स व शैतान गुनाहों की तरफ़ बुलाने वाले हैं और बहकाने वाले हैं तुम उनसे भाग कर अल्लाह की पनाह लो तो वो तुम्हें उनकी बुराई से बचा लेंगे। (क़ुरतबी)

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ
الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾ فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾ فَوَيْلٌ
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾

आयत नं० 56 से 60

और मैंने जिन्नात और इन्सान को (असल में) **इसी वास्ते पैदा किया है कि मेरी इबादत किया करें** (मतलब यह कि शरई हुक्म उनसे इबादत कराना है)(56) **मैं उन से** (मख़लूक़ की) **रोज़ी**

नहीं चाहता और न यह चाहता कि वो मुझ को खिलाया करें(57) **अल्लाह ख़ुद ही सब को रोज़ी देने वाला है** (तो हम को इस की ज़रूरत ही क्या थी कि हम लोगों को रोज़ी पहुंचाना उनके ज़िम्मे करते और वो) **ज़ोर आवर बहुत ताक़त वाला है** (कि उसमें कमज़ोरी और लाचारी और किसी क़िस्म की ज़रूरत का शक तक भी नहीं तो उनके खाना मांगने का कोई सवाल ही नहीं)(58) **सो** (अगर ये लोग अब भी शिर्क व कुफ़्र पर जमे रहेंगे तो सुन रक्खें कि) **इन ज़ालिमों की** (सज़ा की) **भी बारी** (आने वाली) **है जैसे उनके** (पहले) **साथियों की बारी** (आई) **थी** (यानी हर मुजरिम ज़ालिम की सज़ा के लिए अल्लाह के यहां ख़ास वक़्त तय है कभी दुनिया व आख़िरत दोनों में कभी सिर्फ़ आख़िरत में) **तो मुझ से जल्दी** (अज़ाब लाने) **की मांग न करें** (जैसा कि उनकी आदत है कि अज़ाब की धमकी सुनकर झुटलाने के लिए जल्दी लाने की मांग करने लगते हैं)(59) **बस** (जब वो बारी के दिन आएंगे जिसमें सबसे सख़्त क़ियामत का दिन है तो) **इन काफ़िरों के लिए उस दिन के आने से बड़ी ख़राबी होगी जिसका उनसे वादा किया जाता है।**(60)

नोटः- यहां मालूम हुआ कि इन्सान की पैदाइश का असल मक़सद इबादत करना है सिर्फ़ अपने पैदा करने वाले की । अल्लाह तआ़ला उससे अपना या अपनी मख़लूक़ का कोई नफ़ा नहीं चाहते।

52-सूरत-तूर

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '49' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَ الطُّوْرِ ﴿۱﴾ وَ كِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿۲﴾ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿۳﴾ وَّ الْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿۴﴾ وَ السَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿۵﴾ وَ الْبَحْرِ
الْمَسْجُوْرِ ﴿۶﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿۷﴾ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ﴿۸﴾ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿۹﴾ وَّ تَسِيْرُ الْجِبَالُ
سَيْرًا ﴿۱۰﴾ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۱﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿۱۲﴾ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ
دَعًّا ﴿۱۳﴾ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۱۴﴾ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۱۵﴾ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ
لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ نَعِيْمٍ ﴿۱۷﴾ فٰكِهِيْنَ بِمَآ
اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَ وَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿۱۸﴾ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ
عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَ زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿۲۰﴾ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ اتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ وَ مَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ كُلُّ امْرِئٍۭ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿۲۱﴾ وَ اَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّ
لَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿۲۲﴾ يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَ لَا تَاْثِيْمٌ ﴿۲۳﴾ وَ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ
لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿۲۴﴾ وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿۲۶﴾ فَمَنَّ اللّٰهُ
عَلَيْنَا وَ وَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿۲۷﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿۲۸﴾

आयत नं० 01 से 28

क़सम है तूर (पहाड़) **की(1) और उस लिखी हुई किताब की(2) जो खुले हुए काग़ज़ में** (लिखी है मुराद इससे आमाल नामा) **है(3) और** (क़सम है) **बैते मामूर की** (जो सातवें आसमान में फ़रिशतों का काबा है)**(4) और** (क़सम है) **ऊँची छत** (की यानी आसमान) **की(5) और** (क़सम है पानी से) **भरे हुए समन्दर की(6)** (आगे क़सम का जवाब है कि) **बेशक आप के रब का अज़ाब ज़रूर होकर रहेगा(7) कोई उसको रोक नहीं सकता(8)** (और यह उस दिन होगा) **जिस दिन**

आसमान थरथराने लगेगा(9) और पहाड़ (अपनी जगह से) **हट जाएंगे** (मुराद क़ियामत का दिन है)(10) **तो उस दिन उनकी बड़ी ख़राबी होगी जो** (सच्चे दीन को) **झुटलाने वाले हैं**(11) (और) **जो इस** (झुटलाने के) **काम में बेहूदगी से लगे हुए हैं** (जिससे वो अज़ाब के हक़दार हो गये)(12) **उस दिन उनको दोज़ख़ की आग की तरफ़ धक्के देकर लाएंगे**(13) (और उनको दोज़ख़ दिखाकर कहा जाएगा कि) **यह वो ही दोज़ख़ है जिसको तुम झुटलाया करते** (थे यानी जिन आयतों में इसकी ख़बर थी उनको झुटलाते थे और उन आयतों को जादू कहा करते) **थे(14) तो क्या यह** (भी) **जादू है** (देख कर बताओ) **या यह कि तुम को** (अब भी) **दिखाई नहीं देता** (जैसा दुनिया में दिखाई न देने की वजह से इनकार करते थे)(15) **दाख़िल हो जाओ** (अब) **इसमें फिर चाहे** (इसकी) **सहार करना या सहार न करना तुम्हारे लिए दोनो बराबर हैं** (न ये ही होगा कि तुम्हारे चीख़ पुकार करने से छुटकारा हो जाए और न ये ही होगा कि तुम्हारे सहार करने पर तरस खाकर निकाल दिया जाए बल्कि सदा उसी में रहना होगा), **और जैसा तुम करते थे वैसा ही बदला दिया जाएगा**(16) **परहेज़गार लोग बेशक** (जन्नत के) **बाग़ों और ऐश के सामान में होंगे**(17) (और) **उन को जो चीज़ें** (ऐश व आराम की) **उनके रब ने दी होंगी, और उनका रब उन को दोज़ख़ के अज़ाब से बचाएगा**(18) (और जन्नत में दाख़िल करके कहेगा कि) **ख़ूब खाओ और पियो मज़े के साथ अपने** (उन नेक) **कामों के बदले में** (जो दुनिया में किया करते थे)(19) **तकिया लगाए हुए तख़्तों पर** (आराम करेंगे) **जो बराबर बिछाए हुए हैं और हम उनकी बड़ी आंखों वाली** (यानी ख़ूबसूरत) **हूरों से शादी कर देंगे(20) और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया** (यानी वो भी ईमान लाए भले ही नेकियों में वो अपने बाप दादा के दर्जे को नहीं पहुंचे लेकिन उनके बाप दादा की इज़्ज़त और उनको ख़ुश करने के लिए) **हम उनकी औलाद को भी** (दर्जे में) **उनके साथ शामिल कर देंगे और** (इस शामिल करने के लिए) **हम उन** (जन्नती बड़ों) **की नेकियों में से कोई चीज़ कम नहीं** (करेंगे यानी औलाद की नेकियां बढ़ाने के लिए बाप दादा की नेकियों में कमी न की जाएगी कि उन से लेकर इनको दें बल्कि अपने पास से देकर बराबर) **करेंगे,** (लेकिन इसके लिए ईमान शर्त है काफ़िर औलाद को बड़ों के ईमान से नफ़ा नहीं हो सकता क्योंकि काफ़िरों में से) **हर आदमी अपने** (कुफ़्र के) **कामों में** (दोज़ख़ में) **गरिफ़्तार रहेगा** (छुटकारे की कोई सूरत नहीं होगी)(21) **और** (आगे फिर ईमान वाले जन्नती लोगों के बारे में है कि) **हम उनको फल और गोश्त जैसा वो पसन्द करेंगे लगातार देते चले जाएंगे**(22) (और) **वहां आपस में** (ऐसे) **शराब के पियालों पर** (दोस्ताना) **छीना झपटी भी किया करेंगे कि उस** (शराब)

में न बेहूदा बात होगी (क्योंकि नशा न होगा) **और न कोई गुनाह** (की बात)(23) **और उनके पास** (चीज़ें लाने के लिए) **ऐसे लड़के आएं जाएंगे जो ख़ास उन ही** (की ख़िदमत) **के लिए होंगे** (और ख़ूबसूरती में ऐसे होंगे) **जैसे कि वो हिफ़ाज़त से रक्खे हुए मोती हैं** (कि उन पर ज़रा धूल गर्द नहीं होती और चमक दमक ख़ूब होती है)(24) **और** (ख़ुश होकर) **वो** (आपस में) **एक दूसरे की तरफ़ ध्यान करके बात करेंगे**(25) (और बात चीत में) **यह भी कहेंगे कि** (भाई) **हम तो इससे पहले घर** (यानी दुनिया) **में** (अन्जाम से) **बहुत डरा करते थे**(26) **सो अल्लाह ने हम पर बड़ा अहसान किया और हम को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया**(27) (और) **हम इससे पहले** (यानी दुनिया में) **उससे दुआएं मांगा करते थे** (कि हम को दोज़ख़ से बचा कर जन्नत में ले जाए सो अल्लाह ने दुआ क़ुबूल करली), **बेशक वो बड़ा अहसान करने वाला महरबान है**(28)

नोटः- हदीस में है कि मैराज की रात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सातवें आसमान पर पहुंचे तो उन को बैते मामूर की तरफ़ ले जाया गया (बैते मामूर सातवें आसमान पर फ़रिशतों का काबा है) जिसमें हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिशते इबादत के लिए दाख़िल होते हैं फिर कभी उनको दोबारा यहां पहुंचने की नौबत नहीं आती (क्योंकि हर दिन दूसरे नये फ़रिशतों का नम्बर होता है) । (इब्ने कसीर)

فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّ لَا مَجْنُوْنٍ ﴿۲۹﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿۳۰﴾ قُلْ
تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿۳۱﴾ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿۳۲﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۳﴾ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿۳۴﴾ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ
الْخٰلِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿۳۶﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ
الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۸﴾ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَ لَكُمُ
الْبَنُوْنَ ﴿۳۹﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿۴۰﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿۴۱﴾ اَمْ
يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۗ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ﴿۴۲﴾ اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۴۳﴾ وَ اِنْ
يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ﴿۴۴﴾ فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ
يُصْعَقُوْنَ ﴿۴۵﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّ لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ اِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَ

لَكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۝ وَمِنَ
الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ۝

आयत नं० 29 से 49

सो (ऐ पैग़म्बर जैसा कि लोगों को समझाना आप की ज़िम्मेदारी है तो) **आप** (लोगों को) **समझाते रहिए क्योंकि आप अपने रब की महरबानी से न तो काहिन** (यानी जिन्नात से पूछ कर ग़ैब की ख़बरें बताने वाले) **हैं और न दीवाने** (हैं मतलब यह कि आप पैग़म्बर) **हैं** (और पैग़म्बर का काम सदा नसीहत करते रहना है चाहे लोग कुछ ही बकें)(29) **हां क्या ये लोग** (आपके बारे में) **यह** (भी) **कहते हैं कि यह शाइर हैं** (और) **हम इनके बारे में मौत के हादसे का इन्तिज़ार कर रहे** (हैं यानी आप शाइर हैं जिस तरह और शाइर लोग मर कर ख़त्म हो गये आप भी उन्हीं में के एक) **हैं** (इसी तरह आप भी हलाक हो जाएंगे तो इस्लाम का क़िस्सा ख़त्म हो जाएगा)(30) **आप कह दीजिए कि** (अच्छा) **तुम इन्तिज़ार कर लो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में** (हूं यानी तुम मेरा अन्जाम देखो मैं तुम्हारा अन्जाम देखता) **हूं** (इसमें इशारा है कि मेरा अन्जाम कामयाबी है और तुम नाकाम रहोगे यह दीन नहीं मिटेगा)(31) **क्या इन की अक्लें इन को ये ही बात सिखाती हैं या यह है कि ये शरारती लोग हैं**(32) **हां क्या वो यह** (भी) **कहते हैं कि इन्होंने इस** (क़ुरआन) **को ख़ुद बना लिया है** (यह बात नहीं है) **बल्कि** (यह बात सिर्फ़ इस वजह से कहते हैं कि) **ये लोग** (हटधर्मी की वजह से इस पर) **ईमान नहीं लाते**(33) (अच्छा अगर यह इनका बनाया हुआ है) **तो ये लोग** (भी बहुत पढ़े लिखे हैं) **इस तरह का कोई कलाम** (बनाकर) **ले आएं अगर ये** (इस दावे में) **सच्चे हैं**(34) (आगे तौहीद का बयान है कि ये लोग जो तौहीद का इनकार करते हैं तो) **क्या ये लोग बिना किसी पैदा करने वाले के आप से आप ही पैदा हो गये या ये ख़ुद अपने पैदा करने वाले हैं**(35) **या उन्होंने आसमान व ज़मीन को पैदा किया** (है मतलब यह कि जब पैदा करने वाला एक है तो माबूद भी एक ही होना ज़रूरी) **है बल्कि ये लोग** (जहालत की वजह से तौहीद का) **यक़ीन नहीं लाते**(36) (आगे पैग़म्बरी के बारे में बयान है कि) **क्या इन लोगों के पास तुम्हारे रब** (की नेमतों और रहमतों) **के ख़ज़ाने हैं** (जिनमें पैग़म्बरी भी दाख़िल है कि जिसको चाहे पैग़म्बरी देदो) **या ये लोग** (पैग़म्बरी के महकमे के) **हाकिम हैं** (कि जिसे चाहें पैग़म्बरी दिलवा दें जो ये लोग इस बारे में मशवरे देते हैं कि पैग़म्बर फ़लां अमीर या फलां सरदार होना चाहिए था)(37) **या इन लोगों के पास कोई सीढ़ी है कि उस पर** (चढ़ कर आसमान की) **बातें सुन लिया करते हैं** (और अगर

मान लो कहें कि हां हम आसमान पर चढ़ कर वहां की बातें सुन आते हैं) **तो इन में जो** (वहां की) **बातें सुन आता हो** (इस दावे पर) **कोई साफ़ दलील पेश करे(38)** (आगे फिर तौहीद के बारे में एक ख़ास बात है कि जो लोग फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां बताकर शिर्क करते हैं तो हम उनसे पूछते हैं कि) **क्या अल्लाह के लिए बेटियां** (ठहराई जाएं) **और तुम्हारे लिए बेटे हैं** (यानी अपने लिए तो वो चीज़ पसन्द करते हो जिसे बड़े दर्जे की समझते हो और अल्लाह के लिए वो जिसे कम दर्जे की समझते हो)(39) **क्या आप उनसे** (तबलीग़ पर) **कुछ बदला मांगते हैं कि वो तावान उन लोगों को भारी लगता** (है इसलिए आप का पैग़म्बर होना नागवार) **है(40)** (वो लोग जो यह कहते हैं कि एक तो क़ियामत होगी नहीं और अगर मान लो होगी तो हम वहां भी अच्छे रहेंगे तो) **क्या उनके पास ग़ैब का इल्म है कि ये** (उसको) **लिख लेते हैं(41) क्या ये लोग** (पैग़म्बर के साथ) **कुछ बुराई करने का इरादा रखते हैं, सो ये काफ़िर ख़ुद ही** (उस) **बुराई** (के वबाल) **में गरिफ़्तार होंगे** (जैसा कि इस इरादे में नाकाम हुए और जंगे बद्र में मारे गये)(42) **क्या इन का अल्लाह के सिवा कोई माबूद है, अल्लाह उनके शिर्क से पाक है(43) और** (ये कहते हैं कि आप पैग़म्बर हैं तो इस के सबूत के लिए हम पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा दो मगर वो ऐसे हटधर्मी हैं कि) **अगर** (उनका यह मांगा हुआ मोजिज़ा आ भी जाए और) **वो आसमान के टुकड़े को देख** (भी) **लें कि गिरता हुआ आ रहा है तो** (उस को भी) **यह कह दें कि यह तो गहरा बादल** (है बस ऐसा मोजिज़ा दिखाने से कोई फ़ाइदा नहीं) **है(44) सो** (जब ये लोग ऐसे बाग़ी हैं तो इन से ईमान की उम्मीद करके ग़म में न पड़िए बल्कि) **उनको** (उन्ही की हालत पर) **रहने दीजिए यहां तक कि ये अपने उस दिन से जा मिलें जिसमें उनके होश उड़ जाएंगे** (मुराद क़ियामत का दिन है)(45) **जिस दिन उनकी चालें** (जो दुनिया में इस्लाम की मुख़ालफ़त और अपनी कामयाबी के बारे में किया करते थे) **उन के कुछ भी काम न आएंगी और न** (कहीं से) **उन को मदद मिलेगी** (न तो लोगों की तरफ़ से और न अल्लाह की तरफ़ से)(46) **और** (आख़रत में तो उन पर यह मुसीबत आएगी ही लेकिन) **इन ज़ालिमों के लिए इस** (अज़ाब) **से पहले भी अज़ाब होने वाला है** (यानी दुनिया में जैसे अकाल पड़ना जंग में मारा जाना) **लेकिन इनमें अक्सर लोगों को पता नहीं(47) और** (जब आप को मालूम हो गया कि हम उनकी सज़ा के लिए एक वक़्त तय कर चुके हैं तो) **आप अपने रब के इस फ़ैसले पर सब्र से बैठे रहिए** (और इन लोगों के लिए ख़ुदाई अज़ाब की जल्दी न कीजिए जो मुसलमानों की मर्ज़ी और उनकी मदद के लिए चाहते थे और न यह सोचिए कि कहीं इस मुहलत में आप को नुक़सान न पहुंचा दें क्योंकि) **आप हमारी हिफ़ाज़त में हैं** (फिर क्या डरना जैसा कि

ऐसा ही हुआ) **और** (अगर उनके कुफ़्र का ग़म दिल पर आए तो उस का इलाज यह है कि अल्लाह का ध्यान कीजिए जैसे कि) **उठते वक़्त अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह किया कीजिए** (जैसे तहज्जुद में और मजलिस से उठते वक़्त)(48) **और रात** (के किसी हिस्से) **में भी उस की तस्बीह किया कीजिए** (जैसे इशा के वक़्त) **और सितारों के छुप जाने के बाद भी** (जैसे सुबह की नमाज़ में बस अपने दिल को इधर लगाए रखिए फिर फ़िक्र व ग़म सवार न होगा)(49)

नोटः- एक हदीस में है कि जो आदमी रात को जाग गया और उसने ये कलमे पढ़े तो जो दुआ करेगा कुबूल की जाएगी वो कलमे ये हैं:

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

लाइलाहू इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर ।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ ○

सुबहानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि वला इलाह्य इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौल्य वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि

फिर अगर उसने नमाज़ पढ़ने का इरादा किया और वुज़ू करके नमाज़ पढ़ी तो उसकी नमाज़ कुबूल की जाएगी । (इब्ने कसीर)

53-सूरत-नज्म

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '62' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ۙ ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۚ ﴿٢﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ؕ ﴿٣﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۙ ﴿٤﴾ عَلَّمَهٗ
شَدِيْدُ الْقُوٰى ۙ ﴿٥﴾ ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۙ ﴿٦﴾ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ؕ ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۙ ﴿٨﴾ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ
اَدْنٰى ۚ ﴿٩﴾ فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ؕ ﴿١٠﴾ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿١١﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً
اُخْرٰى ۙ ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ؕ ﴿١٥﴾ اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۙ ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا
طَغٰى ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾

आयत नं० 01 से 18

क़सम है सितारे की जब वो छुपने लगे (इसमें इशारा है कि जिस तरह सितारे से दुनिया में रास्ता पता करते हैं उसी तरह दीन का रास्ता पैग़म्बर से मालूम करें)(1) **ये तुम्हारे** (हर वक़्त के) **साथ** (और सामने) **रहने वाले** (पैग़म्बर जिन की आदतों और सच्चाई को तुम जानते हो) **न** (सीधे) **रास्ते से भटके और न ग़लत रास्ते पर चले** (यानी तुम जो उन को पैग़म्बरी के दावे और इस्लाम की दावत में बेराह समझते हो यह बात नहीं बल्कि आप सच्चे पैग़म्बर हैं)(2) **और ये अपनी मनमर्ज़ी से कुछ नहीं बोलते** (जैसा तुम लोग कहते हो कि इन्होंने कुरआन ख़ुद बना लिया है)(3) **उनका बयान तो ख़ालिस वही है जो उनके पास भेजी जाती** (है चाहे लफ़्ज़ों की भी हो जो कुरआन कहलाता है चाहे सिर्फ़ माइने मतलब की हो और लफ़्ज़ पैग़म्बर के हों जो सुन्नत कहलाती) **है**(4) (आगे वही के आने का रास्ता बताते हैं कि) **उन को एक फ़रिशता** (यह वही अल्लाह की तरफ़ से) **सिखाता है जो बड़ा ताक़तवर है**(5) (और वो) **पैदाइशी ताक़तवर** (है मतलब यह कि यह कलाम न किसी शैतान के वास्ते से आप तक पहुंचा और न शैतान बीच में दख़ल दे सकता है बल्कि वो आप के पास फटक भी नहीं सकता) **है,** (और आपने उस फ़रिशते को बहुत बार दूसरी

सूरत में देखा) **फिर** (एक बार ऐसा भी हुआ कि) **वो फ़रिशता** (अपनी) **असली सूरत पर** (आपके सामने) **आया(6) और ऐसी हालत में** (सामने आया) **कि वो** (आसमान के) **ऊंचे किनारे पर था(7) फिर वो फ़रिशता** (आप के) **नज़दीक आया फिर और नज़दीक आया(8) सो** (नज़दीकी की वजह से) **दो कमानों के बराबर दूरी रह गई बलिक और भी कम** (दूरी रह गई यानी बहुत ही नज़दीक हो गया)(9) **फिर अल्लाह तआ़ला ने** (उस फ़रिशते के वास्ते से) **अपने बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर वही उतारी जो कुछ उतारनी थी(10)** (आगे बयान है कि हुज़ूर ने हज़रत जिब्रील को पूरी तरह पहचान लिया यानी) **दिल ने देखी हुई चीज़ में ग़लती नहीं की(11) तो क्या इन** (पैग़म्बर) **से उनकी देखी** (भाली) **हुई चीज़ में झगड़ते हो(12) और उन्होंने** (यानी पैग़म्बर ने तो) **उस फ़रिशते को एक और बार भी** (असली सूरत में) **देखा है(13)** (यानी मैराज की रात में) **सिदरतुल मुन्तहा** (नाम के पेड़) **के पास** (जो सातवे आसमान में है)(14) **उसके पास जन्नतुल मावा** (यानी जन्नती लोगों का घर) **है(15) जब उस सिदरतुल मुन्तहा को लिपट रही थीं जो चीज़ें लिपट रहीं थीं** (यानी यह देखना उस वक़्त हुआ, और वो चीज़ क्या थी एक रिवायत में है कि सोने के परवाने थे और एक रिवायत में है कि फ़रिशते थे जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत को आए थे)(16) **निगाह** (पैग़म्बर की उस वक़्त) **न तो हटी** (बल्कि उन चीज़ों को ख़ूब देखा) **और** (जिन चीज़ों के देखने का हुक्म जब तक न हुआ) **न** (उनकी तरफ़ देखने को आप की निगाह) **बढ़ी** (यानी इजाज़त से पहले नहीं देखा मतलब यह कि उन अजीब चीज़ों को देख कर चकराए नहीं)(17) **उन्होंने** (यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने) **अपने रब की** (क़ुदरत की) **बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं** (मगर हर चीज़ के देखने में आप की ये ही शान रही कि न तो निगाह हटी और न हद से आगे बढ़ी और यह शान पैग़म्बर ही की हो सकती है)(18)

नोटः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने हदीस बयान की कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील अमीन को इस हालत में देखा कि उन के छः सौ पर थे । (बुख़ारी)

اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾
اِنْ هِىَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا
تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾ وَكَمْ

مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ۝٢٦ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ۝٢٧ وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ
الظَّنَّ لَا يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۚ ۝٢٨

आयत नं० 19 से 28

(ऐ मुशरिको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा नबी साबित हो जाने के बाद तुम फिर भी तौहीद को छोड़ कर बुतों की पूजा करते हो तो) **भला क्या तुमने** (इन बुतों के बारे में) **सोचा** (भी) **है** (ताकि तुम को पता चले कि वो इबादत के क़ाबिल हैं या नहीं जैसे) **लात और इ़ज़्ज़ा के बारे में(19) और एक तीसरे मनात के बारे में(20)** (और एक और बात भी सोचने की है कि तुम जो फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां बताकर उनकी इबादत करते हो तो) **क्या तुम्हारे लिए तो बेटे हों और अल्लाह के लिए बेटियां** (हों यानी जिन लड़कियों को तुम शर्म की बात समझते हो वो अल्लाह के लिए ठहराई जाएं)(21) **इस हालत में तो यह बहुत बेढंगा बान्टना हुआ** (कि अच्छी चीज़ तुम्हारे हिस्से में आई बुरी चीज़ अल्लाह के हिस्से में यह दस्तूर के हिसाब से कहा वर्ना अल्लाह का बेटा बताना भी बेढ़ंगी बात है)(22) **ये** (बनाए हुए माबूद तो) **बस नाम ही नाम हैं जिन को तुम ने और तुम्हारे बाप दादों ने** (आप ही) **ठहरा लिया है अल्लाह तआ़ला ने तो उन** (के माबूद होने) **की कोई दलील भेजी नहीं,** (बल्कि) **ये लोग** (इस बारे में) **सिर्फ़ अटकली बातों पर और अपनी मनमर्ज़ी पर चल रहे हैं हालांकि उनके पास उनके रब की तरफ़ से** (पैग़म्बर के वास्ते से सही बात की) **हिदायत आ चुकी हैं(23)** (आगे इसका बयान है कि तुमने जो बुतों को इसलिए माबूद माना है कि ये अल्लाह के पास तुम्हारी सिफ़ारिश करेंगे सिर्फ़ धोका है सोचो कि) **क्या इन्सान को उस की हर तमन्ना मिल जाती है(24)** (ऐसा नहीं है क्योंकि हर तमन्ना) **अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है आख़रत** (की भी) **और दुनिया** (की भी बस वो जिस को चाहें पूरा कर दें तो यह तमन्ना कि बुतों की सिफ़ारिश मान ली जाएगी पूरी न होगी)(25) **और** (बेचारे बुत तो क्या सिफ़ारिश करते उस दरबार में तो ईमान वालों की भी बिना अल्लाह की इजाज़त के कुछ नहीं चलती जैसा कि) **बहुत से फ़रिशते आसमानों में मौजूद हैं उनकी सिफ़ारिश ज़रा भी काम नहीं आ सकती** (बल्कि सिफ़ारिश हो नहीं सकती) **मगर इसके बाद कि अल्लाह तआ़ला जिसके लिए चाहें इजाज़त देदें और** (उसके लिए सिफ़ारिश करने से) **राज़ी हों(26)** (आगे इसका बयान है कि फ़रिशतों को

अल्लाह तआ़ला की बेटियां कहना कुफ़्र है कि) **जो लोग आख़रत पर ईमान नहीं रखते** (बल्कि उसके इनकार की वजह से काफ़िर हैं) **वो फ़रिशतों को** (अल्लाह की) **बेटी का नाम देते हैं**(27) **हालांकि उनके पास इस पर कोई दलील नहीं, सिर्फ़ बेअसल बातों पर चल रहे हैं और बेशक बेअसल बातें हक़ बात** (के सबूत) **में ज़रा काम नहीं आ सकतीं**(28)

नोटः- अरब के मुशरिकों के बुत जिनकी वो पूजा करते थे अनगिनत थे मगर उनमें से तीन ज़्यादा मशहूर थे । लात, मनात और इ़ज़्ज़ा। ये अलग-अलग क़बीलों के बुत थे ।

فَاَعۡرِضۡ عَنۡ مَّنۡ تَوَلّٰی ۬ۙ عَنۡ ذِکۡرِنَا وَ لَمۡ یُرِدۡ اِلَّا الۡحَیٰوۃَ الدُّنۡیَا ﴿۲۹﴾ ذٰلِکَ مَبۡلَغُہُمۡ مِّنَ الۡعِلۡمِ ؕ اِنَّ رَبَّکَ ہُوَ
اَعۡلَمُ بِمَنۡ ضَلَّ عَنۡ سَبِیۡلِہٖ ۙ وَ ہُوَ اَعۡلَمُ بِمَنِ اہۡتَدٰی ﴿۳۰﴾ وَ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ۙ لِیَجۡزِیَ الَّذِیۡنَ
اَسَآءُوۡا بِمَا عَمِلُوۡا وَ یَجۡزِیَ الَّذِیۡنَ اَحۡسَنُوۡا بِالۡحُسۡنٰی ﴿ۚ۳۱﴾ اَلَّذِیۡنَ یَجۡتَنِبُوۡنَ کَبٰٓئِرَ الۡاِثۡمِ وَ الۡفَوَاحِشَ اِلَّا
اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّکَ وَاسِعُ الۡمَغۡفِرَۃِ ؕ ہُوَ اَعۡلَمُ بِکُمۡ اِذۡ اَنۡشَاَکُمۡ مِّنَ الۡاَرۡضِ وَ اِذۡ اَنۡتُمۡ اَجِنَّۃٌ فِیۡ بُطُوۡنِ
اُمَّہٰتِکُمۡ ۚ فَلَا تُزَکُّوۡۤا اَنۡفُسَکُمۡ ؕ ہُوَ اَعۡلَمُ بِمَنِ اتَّقٰی ﴿۳۲﴾ ع

आयत नं० 29 से 32

(जब इन से मानने की उम्मीद नहीं) **तो आप ऐसे आदमी से अपना ध्यान हटा लीजिए जो हमारी नसीहत का ध्यान न करे और दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा कुछ और चाहता ही** (नहीं जिसकी वजह यह है कि आख़रत पर ईमान) **नहीं**(29) **उन लोगों की समझ की हद बस यह** (दुनिया की ज़िन्दगी तक) **ही है,** (तो उन की फ़िक्र न कीजिए उन का मुआमला अल्लाह के हवाला कीजिए बस) **तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है और वो ही उस को भी ख़ूब जानता है जो सीधे रास्ते पर** (है बस इल्म तो उस का ऐसा) **है**(30) **और** (कुदरत उस की ऐसी है कि) **जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है वो सब अल्लाह का है अन्जाम कार यह है कि बुरा काम करने वालों को उन के** (बुरे) **काम के बदले में** (ख़ास) **बदला देगा और नेक काम करने वालों को उनके नेक कामों के बदले में** (ख़ास) **बदला देगा**(31) (आगे नेक लोगों का बयान है कि) **वो लोग ऐसे हैं कि बड़े गुनाहों से और** (उसमें) **बेहयाई की बातों से** (ख़ास कर ज़्यादा) **बचते हैं मगर हल्के हल्के गुनाह** (कभी-कभी हो जाएं तो

और बात है मगर वो उन से भी तौबा कर लेते हैं), **बेशक आप के रब की बख़्शिश बहुत बड़ी** (है कि अगर वो चाहे तो सिवाए कुफ़्र व शिर्क के और गुनाहों को सिर्फ़ महरबानी से मुआफ़ कर देता है तो छोटे गुनाहों के मुआफ़ होने में तो और ज़्यादा उम्मीद) **है, वो तुम को** (और तुम्हारी हालतों को उस वक़्त से) **ख़ूब जानता है जब तुम को** (यानी तुम्हारे सब के बाप आदम अलैहिस्सलाम को) **ज़मीन** (की मिट्टी) **से पैदा किया था** (इस वास्ते से तुम भी मिट्टी से पैदा हुए) **और जब तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे थे** (और इन दोनों हालतों में तुम को ख़ुद अपनी कोई जानकारी न थी और हम को इल्म था बस इसी तरह अब भी तुम्हारा ख़ुद अपने से अन्जान होना और हमारा जानकार होना कोई अचम्भे की बात नहीं जब यह बात है) **तो तुम अपने को पाक साफ़** (व नेक) **न समझा करो** (क्यों कि) **परहेज़गारों** (और नेक लोगों) **को वो ही ख़ूब जानता है** (कि फ़लां परहेज़गार है फलां नहीं भले ही देखने मे दोनो नेक काम करते हैं)(32)

नोटः- एक हदीस में है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक दूसरे आदमी की तारीफ़ की आपने मना फ़रमाया। और फ़रमाया कि तुम्हें किसी की तारीफ़ करना ही हो तो इन लफ़्ज़ों से करो कि मेरी जानकारी में यह आदमी नेक परहेज़गार है और मैं यह नहीं कह सकता कि अल्लाह के नज़दीक भी वो ऐसा ही पाक साफ़ है जैसा मैं समझ रहा हूं।

أَفَرَءَيْتَ الَّذِي تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾ وَأَعْطٰى قَلِيلًا وَّأَكْدٰى ﴿٣٤﴾ أَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿٣٥﴾ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي
صُحُفِ مُوسٰى ﴿٣٦﴾ وَإِبْرٰهِيمَ الَّذِي وَفّٰى ﴿٣٧﴾ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰى ﴿٣٨﴾ وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾
وَأَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْأَوْفٰى ﴿٤١﴾ وَأَنَّ إِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾ وَأَنَّهٗ هُوَ أَضْحَكَ وَ
أَبْكٰى ﴿٤٣﴾ وَأَنَّهٗ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾ وَأَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى ﴿٤٥﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنٰى ﴿٤٦﴾ وَأَنَّ
عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرٰى ﴿٤٧﴾ وَأَنَّهٗ هُوَ أَغْنٰى وَأَقْنٰى ﴿٤٨﴾ وَأَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿٤٩﴾ وَأَنَّهٗٓ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولٰى ﴿٥٠﴾
وَثَمُودَاۡ فَمَآ أَبْقٰى ﴿٥١﴾ وَقَوْمَ نُوحٍ مِّنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغٰى ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوٰى ﴿٥٣﴾
فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾ فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾ هٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولٰى ﴿٥٦﴾ أَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا
مِنْ دُونِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ أَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ﴿٦٠﴾ وَأَنْتُمْ سٰمِدُونَ ﴿٦١﴾
فَاسْجُدُوا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوا ﴿٦٢﴾ السجدة

आयत नं० 33 से 62

नोटः- कोई आदमी मुसलमान हो गया था उसके साथी ने उस को बुरा भला कहा कि तूने अपने बाप दादा के दीन को क्यों छोड़ दिया उसने कहा कि मैं अल्लाह के अज़ाब से डरता हूं वो बोला कि तू मुझ को कुछ देदे तो मैं आख़रत का तेरा अज़ाब अपने सर पर रख लूंगा तू अज़ाब से बच जाएगा बस उसने कुछ दे दिया उसने और मांगा तो कुछ खींचतान के बाद कुछ और भी दे दिया और बाक़ी की तहरीर गवाहों के साथ लिखदी इसके बाद ये आयतें उतरीं:-

(ऐ पैग़म्बर) **भला आपने ऐसे आदमी को भी देखा जिसने** (सच्चे दीन से) **मुंह फेर लिया** (यानी इस्लाम से हट गया)(33) **और थोड़ा माल दिया और** (फिर) **बन्द कर दिया** (यानी जिस आदमी से माल देने का वादा अपने मतलब के वास्ते किया था वो भी पूरा न दिया ऐसा कन्जूस आदमी दूसरे को नफ़ा पहुंचाने के लिए क्या ख़र्च करेगा जब अपने ही मतलब के लिए पूरा ख़र्च न कर सका)(34) **क्या ऐसे आदमी के पास** (किसी सही वास्ते से) **ग़ैब का इल्म** (पहुंचा) **है कि उस को देख रहा है** (जिससे पता चल गया कि वो आदमी मेरी तरफ़ से मेरे गुनाहों का अज़ाब अपने सर लेकर मुझे अज़ाब से बचा देगा)(35) **क्या उस को उन बातों की ख़बर नहीं मिली जो मूसा** (अलैहिस्सलाम पर उतरी किताब) **के पन्नों में है**(36) **और इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम पर उतरी किताब) **के** (पन्नों में भी) **जिन्होंने हुक्मों की पूरी पाबन्दी की**(37) (और वो बात) **यह** (है) **कि कोई आदमी किसी का गुनाह अपने ऊपर** (इस तरह से) **नहीं ले सकता** (कि गुनाह करने वाला बरी हो जाए फिर यह आदमी कैसे समझ गया कि मेरा सारा गुनाह वो आदमी अपने सर रख लेगा)(38) **और यह** (बात है) **कि इन्सान को** (ईमान के बारे में) **सिर्फ़ अपनी ही कमाई मिलेगी** (यानी किसी दूसरे का ईमान उसके काम न आएगा और ज़िम्मेदारी लेने वाले उस आदमी के पास तो ईमान भी नहीं)(39) **और यह** (बात है) **कि इन्सान की कोशिश बहुत जल्द देखी जाएगी**(40) **फिर उस को पूरा बदला दिया जाएगा** (इसके बावजूद यह आदमी अपने सुधार की कोशिश से कैसे बेपरवा हो गया)(41) **और यह** (बात है) **कि** (सब को) **आप के रब ही के पास पहुंचना है** (फिर वो आदमी कैसे निडर हो गया)(42) **और यह** (बात है) **कि वो ही हंसाता और रूलाता है**(43) **और यह कि वो ही मौत देता है और ज़िन्दगी देता है**(44) **और यह कि उसी ने नर और मादा के जोड़े पैदा किये**(45) (और पैदा किये) **मनी** (की बून्द) **से जब** (उसे बच्चे दानी में) **डाला जाता है**(46) **और यह** (बात है) **कि दोबारा पैदा करना** (भी) **उस के ज़िम्मे है** (यानी ऐसा ज़रूर होने वाला है

तो उस आदमी के निडर होने की वजह यह भी न होनी चाहिए कि क़ियामत न आएगी)(47) **और यह** (बात है) **कि वो ही मालदार करता है** (यानी दौलत देता है) **और ख़ज़ाना देता** (है यानी दौलत को बचाकर रखता और बाक़ी रखता) **है(48) और यह** (बात है) **कि वो ही मालिक है शिअरा सितारे का भी** (जिस की इबादत जहालत के ज़माने में कुछ लोग करते थे)(49) **और यह** (बात है) **कि उसने पुराने ज़माने की क़ौमे आ़द को** (उसके कुफ़्र की वजह से) **हलाक किया(50) और समूद को भी** (उनमें से) **किसी को बाक़ी न छोड़ा(51) और उनसे पहले नूह** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम को** (हलाक किया)**, बेशक वो सबसे बढ़ कर ज़ालिम और शरारती थे** (कि साढ़े नौ सौ साल की नसीहत में भी राह पर न आए)(52) **और** (लूत अलैहिस्सलाम की) **पलटी हुई बस्तियों को भी** (उसी ने) **फेंक मारा था(53) फिर उन बस्तियों को घेर लिया जिस चीज़ ने घेर लिया** (यानी ऊपर से पत्थर बरसना शुरू हुए, बस यह आदमी अगर इन क़िस्सों को सोचता तो कुफ़्र के अज़ाब से डरता और बेफ़िक्र न होता)(54) **सो** (ऐ इन्सान ये सब नसीहतें तेरे लिए हिदायत का सामान होने की वजह से अल्लाह की नेमतें हैं तो) **तू अपने रब की कौन सी नेमत में शक** (व इनकार) **करता रहेगा** (और इन बातों की तस्दीक़ करके नफ़ा न उठाएगा)(55) **ये** (पैग़म्बर) **भी पहले पैग़म्बरों की तरह एक** (ख़बरदार करने वाले) **पैग़म्बर हैं(56)** (इन को मान लो क्योंकि) **वो जल्दी आने वाली चीज़** (यानी क़ियामत) **नज़दीक आ पहुंची है(57)** (और जब वो आएगी तो) **अल्लाह के सिवा कोई उसका हटाने वाला नहीं** (बस किसी के भरोसे बेफ़िक्र न होना चाहिए)(58) **सो क्या** (ऐसी डर की बातें सुन कर भी) **तुम लोग इस** (ख़ुदाई) **कलाम से अचम्भा करते हो(59) और** (मज़ाक़ उड़ाते हुए) **हंसते हो और** (अज़ाब के डर से) **रोते नहीं हो(60) और तुम** (ताबेदारी से) **घमन्ड करते हो(61) सो** (इस घमन्ड और बेपरवाई से बाज़ आओ और पैग़म्बर जैसे सिखाते हैं ऐसे) **अल्लाह की ताबेदारी करो और** (सिर्फ़ उसी की) **इबादत करो** (ताकि तुम बख़्शे जाओ)(62)

नोटः- एक हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि सूरत नज्म की आख़री आयत पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सजदा किया और आप को देख मजलिस में हाज़िर सब मुसलमानों और मुशरिकों ने सजदा किया यहां तक कि मौजूद जिन्नात ने भी सजदा किया सिवाए एक बूढ़े के जिसने ज़मीन से एक मुट्ठी मिट्टी की उठा कर माथे से लगाली और कहा कि मुझे ये ही काफ़ी है । हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने उस बूढ़े को कुफ़्र की हालत में मरा हुआ देखा है । इसमें इशारा इस तरफ़ है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

के साथ जिन मुशरिकों ने भी सजदा कर लिया था भले ही उस सजदे का सवाब उन्हें न मिला मगर यह असर छोड़ा गया कि बाद में उन सब को इस्लाम व ईमान की तौफ़ीक़ हो गई सिर्फ़ एक आदमी कुफ़्र पर मरा जिसने सजदा नहीं किया था । (बुख़ारी)

54-सूरत-क़मर

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '55' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِقۡتَرَبَتِ السَّاعَۃُ وَ انۡشَقَّ الۡقَمَرُ ﴿۱﴾ وَ اِنۡ یَّرَوۡا اٰیَۃً یُّعۡرِضُوۡا وَ یَقُوۡلُوۡا سِحۡرٌ مُّسۡتَمِرٌّ ﴿۲﴾ وَ کَذَّبُوۡا وَ اتَّبَعُوۡۤا
اَہۡوَآءَہُمۡ وَ کُلُّ اَمۡرٍ مُّسۡتَقِرٌّ ﴿۳﴾ وَ لَقَدۡ جَآءَہُمۡ مِّنَ الۡاَنۡۢبَآءِ مَا فِیۡہِ مُزۡدَجَرٌ ﴿۴﴾ حِکۡمَۃٌۢ بَالِغَۃٌ فَمَا تُغۡنِ
النُّذُرُ ﴿۵﴾ فَتَوَلَّ عَنۡہُمۡ ۘ یَوۡمَ یَدۡعُ الدَّاعِ اِلٰی شَیۡءٍ نُّکُرٍ ﴿۶﴾ خُشَّعًا اَبۡصَارُہُمۡ یَخۡرُجُوۡنَ مِنَ الۡاَجۡدَاثِ کَاَنَّہُمۡ
جَرَادٌ مُّنۡتَشِرٌ ﴿۷﴾ مُّہۡطِعِیۡنَ اِلَی الدَّاعِ ؕ یَقُوۡلُ الۡکٰفِرُوۡنَ ہٰذَا یَوۡمٌ عَسِرٌ ﴿۸﴾

आयत नं० 01 से 08

क़ियामत नज़दीक आ पहुंची (जिस में झुटलाने पर बड़ी मुसीबत आएगी) **और** (उस की एक निशानी भी आगई जैसा कि) **चान्द फट** (गया यानी दो टुकड़े हो गया और इससे क़ियामत के नज़दीक होने की तस्दीक़ इस तरह होती है कि शक़्क़े क़मर यानी चान्द के दो टुकड़े होना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा है जिससे आप की पैग़म्बरी साबित होती है और सच्चे नबी ने क़ियामत के नज़दीक होने की ख़बर दी है तो क़ियामत का नज़दीक होना साबित हो) **गया(1) और** (चाहिए तो यह था कि) **ये लोग** (इससे असर लेते लेकिन इनकी हालत यह है कि) **अगर कोई मोजिज़ा देखते हैं तो टाल देते हैं और कहते हैं कि यह जादू है जो अभी ख़त्म हो जाता है(2) और इन लोगों ने** (झूट पर जमे रह कर सच्चाई को) **झुटलाया और अपनी मनमर्ज़ी पर चले** (और हटधर्मी से सच्चाई को झुटलाया) **और** (ये जो मोजिज़ों को जादू कहते हैं जिसका असर जल्दी ख़त्म हो जाया करता है तो बात यह है कि) **हर काम** (अपनी असली हालत पर आकर) **ठहर जाता** (है तो कुछ दिनों में पता चल जाएगा कि यह फ़ना हो जाने वाला जादू है या बाक़ी रहने वाला हक़) **है(3) और इन लोगों के पास** (तो पहली उम्मतों की भी) **ख़बरें इतनी पहुंच चुकी हैं कि उनमें नसीहत का बहुत सामान है(4) यानी ऊंचे दर्जे की समझदारी** (हासिल हो सकती) **है सो** (इनकी यह हालत है कि) **ख़बरदार करने वाली चीज़ें इन को कुछ फ़ाइदा ही नहीं देती(5)** (और जब यह हाल है) **तो**

(ऐ पैग़म्बर) **आप भी उनकी परवाह न कीजिए** (जब वो क़ियामत आएगी ख़ुद मालूम हो जाएगा), **जिस दिन एक बुलाने वाला फ़रिशता** (उनको) **एक नागवार चीज़ की तरफ़ बुलाएगा**(6) (उस दिन) **उनकी आंखें** (रूसवाई और डर के मारे) **झुकी हुई होंगी** (और) **क़ब्रों से इस तरह निकल रहे होंगे जैसे टिड्डी फैल जाती है**(7) (और फिर निकल कर) **बुलाने वाले की तरफ़** (यानी हिसाब की जगह जहां जमा होने को पुकारा है) **दौड़े चले जा रहे होंगे,** (और वहां की सख़्तियां देख कर) **काफ़िर कहते होंगे कि यह दिन बड़ा सख़्त है**(8)

नोटः- मक्के के काफ़िरों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आप की पैग़म्बरी के लिए मोजिज़े की निशानी की मांग की तो अल्लाह तआ़ला ने आप की सच्चाई के सबूत के लिए यह शक़्क़ुल क़मर का मोजिज़ा दिखाया कि चान्दनी रात में चान्द के दो टुकड़े होकर एक पूरब की तरफ़ दूसरा पच्छिम की तरफ़ चला गया और दोनों टुकड़ों के बीच में पहाड़ दिखाई देने लगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सब हाज़िर लोगों से कहा कि देखो और गवाही दो। जब सब लोगों ने साफ़ तौर पर यह मोजिज़ा देख लिया तो ये दोनो टुकड़े फिर आपस में मिल गये। इस खुले हुए मोजिज़े का इनकार तो किसी आंखों वाले से नहीं हो सकता था मगर मुशरिक लोग कहने लगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सारी दुनिया पर जादू नहीं कर सकते बाहर मुल्क से आने वाले लोगों का इन्तिज़ार करो वो क्या कहते हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० बताते हैं "कि बाद में बाहर से आने वाले सभी मुसाफ़िरों से उन लोगों ने पूछताछ की तो सब ने ऐसा ही चान्द के दो टुकड़े देखने का इक़रार किया"।

हिन्दुस्तान की मशहूर इतिहास की किताब "तारीख़ फ़रिशता" में लिखा है कि हिन्दुस्तान में महाराजा मालीबार ने यह वाक़िया ख़ुद अपनी आंखों से देखा और अपने रोज़नामचे (डाइरी) में लिखवाया और ये ही वाक़िया उनके मुसलमान होने की वजह बना।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَّازْدُجِرَ ⑨ فَدَعَا رَبَّهُۥٓ أَنِّى مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ⑩
فَفَتَحْنَآ أَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ⑪ وَّفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلَىٰٓ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ⑫ وَحَمَلْنَٰهُ عَلَىٰ
ذَاتِ أَلْوَٰحٍ وَّدُسُرٍ ⑬ تَجْرِى بِأَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ⑭ وَلَقَدْ تَّرَكْنَٰهَآ ءَايَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ⑮ فَكَيْفَ
كَانَ عَذَابِى وَنُذُرِ ⑯ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ⑰

आयत नं० 09 से 17

इन लोगों से पहले नूह (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम ने झुटलाया यानी हमारे** (ख़ास) **बन्दे** (नूह अलैहिस्सलाम) **को झुटलाया और कहा कि ये दीवाने हैं और नूह** (अलैहिस्सलाम) **को** (उनकी तरफ़ से) **धमकी भी दी गई**(9) **तो नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने रब से दुआ की कि मैं बेबस हूं** (उन लोगों का मुक़ाबिला नहीं कर सकता) **तो आप** (इन से) **बदला ले लीजिए** (यानी उनको हलाक कर दीजिए)(10) **बस हम ने मूसलाधार बरसने वाले पानी से आसमान के दरवाज़े खोल दिये**(11) **और ज़मीन से पानी जारी कर दिया फिर** (आसमान और ज़मीन का) **पानी उस काम के** (पूरा होने के) **लिए मिल गया जो** (अल्लाह के यहां) **तय हो चुका था** (यानी दोनो पानी मिलकर तूफ़ान बढ़ा जिसमें सब डूब गये)(12) **और हम ने नूह** (अलैहिस्सलाम) **को** (तूफ़ान से बचाने के लिए) **तख़्तों और कीलों वाली कशती पर** (मोमिनों के साथ) **सवार किया**(13) **जो कि हमारी देख रेख में** (पानी पर) **बहती थी, यह सब कुछ उस** (पैग़म्बर) **का बदला लेने के लिए किया जिस की नाक़द्री की गई थी** (यानी झूटा बताया गया था)(14) **और हमने इस क़िस्से को** (नसीहत की) **एक निशानी बना दिया तो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है**(15) **फिर** (देखो) **मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा हुआ** (यानी जिस अज़ाब से डराया गया वो आकर रहा)(16) **और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने** (को सब के लिए और ख़ास कर अरब वालों) **के लिए आसान कर दिया तो क्या कोई** (इस क़ुरआन से) **नसीहत हासिल करने वाला है** (यानी मक्के के काफ़िरों को ख़ास कर इन क़िस्सों से डरना चाहिए)(17)

नोटः- क़ुरआन करीम को आसान कर देने का मतलब यह है कि उस को हिफ़्ज़ याद करने और उसकी नसीहतों से सबक़ लेने की हद तक उस को आसान कर दिया गया है जिससे हर आलिम व जाहिल एक सा फ़ाइदा उठा सकता है इसका यह मतलब नहीं कि क़ुरआन करीम से मसअले और हुक्म निकालना भी ऐसा आसान हो। वो एक अलग और मुश्किल हुनर है जिसमें उमरें ख़र्च करने वाले बड़े आलिमों को ही हिस्सा मिलता है हर एक का वो मैदान नहीं। इससे उन लोगों की ग़लती साफ़ हो गई जो इस आयत का सहारा लेकर क़ुरआन का पूरा इल्म तरीक़े से हासिल किये बिना आलिम बनना और मसअले निकालना चाहते हैं कि वो खुली गुमराही का रास्ता है।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَ نُذُرِ ﴿١٨﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ
النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾ وَ لَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾ فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّ سُعُرٍ ﴿٢٤﴾ ءَاُلْقِيَ
الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾ سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ
فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَ نَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ
فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَ نُذُرِ ﴿٣٠﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ
الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَ لَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۢ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَ لَقَدْ اَنْذَرَهُمْ
بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾ وَ لَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَ نُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَ لَقَدْ
صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَ لَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾ وَ
لَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

आयत नं० 18 से 42

आद की क़ौम ने (भी अपने पैग़म्बर को) **झुटलाया तो** (उस का क़िस्सा सुनो कि) **मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ**(18) (और वो क़िस्सा यह है कि) **हमने उन पर एक तेज़ आँधी भेजी लगातार नुहूसत के दिन में** (यानी वो दिन उसके वास्ते सदा के लिए मनहूस रहा कि उस दिन जो अज़ाब आया तो क़ब्र के अज़ाब से जुड़ गया और फिर आख़रत के अज़ाब से मिल कर कभी ख़त्म न होगा)(19) **वो आंधी लोगों को** (उनकी जगह से) **इस तरह उखाड़ कर फेंकती थी जैसे वो उखड़ी हुई खजूरों के तने हैं**(20) **सो** (देखो) **मेरा अज़ाब और डराना कैसा** (होलनाक) **हुआ**(21) **और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है क्या काई नसीहत हासिल करने वाला है**(22) **समूद** (की क़ौम) **ने** (भी) **पैग़म्बरों को झुटलाया** (क्योंकि एक पैग़म्बर को झुटलाना सब पैग़म्बरों को झुटलाना है)(23) **कहने लगे क्या हम ऐसे आदमी के पीछे चलें जो हमारी जिन्स का इन्सान है** (और वैसे भी) **अकेला है** (यानी या फ़रिशता होता तो हम दीन में बात मानते या फ़ौजफ़र्रा वाला कोई सरदार होता तो दुनिया की बातों में कहा मानते और अगर हम ऐसी

हालत में कहा मानेंगे) **तो इस सूरत में हम बड़ी ग़लती और** (बल्कि) **दीवानगी में पड़ जाएंगे(24) क्या हम सब में से** (चुन कर) **इसी** (आदमी) **पर वही उतारी है** (हरगिज़ ऐसा नहीं) **बल्कि यह बड़ा झूटा और डींग मारने वाला है(25)** (अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सालिह अलैहिस्सलाम से कहा इनके बकने पर ग़म न करो) **उन को जल्दी ही** (यानी मरते ही) **पता चल जाएगा कि झूटा डींग मारने वाला कौन था(26)** (और ये लोग पैग़म्बरी के सबूत के लिए जो ऊंटनी का मोजिज़ा मांगा करते थे तो) **हम** (इनकी मांग पर पत्थर में से) **ऊंटनी को निकालने वाले हैं उन** (के ईमान) **को आज़माने के लिए इसलिए उन** (की हरकतों) **को देखते रहो और सब्र से काम लो(27) और** (जब ऊंटनी पैदा हो तो) **इन लोगों को यह बता देना कि** (कुंए का) **पानी बान्ट दिया गया है** (यानी तुम्हारे जानवर और ऊंटनी की बारी तय हो गई है) **हर एक बारी वाला अपनी बारी में हाज़िर हो** (यानी ऊंटनी अपनी बारी में पानी पिये और जानवर अपनी बारी में बस ऊंटनी पैदा हुई और सालिह अलैहिस्सलाम ने इसी तरह कह दिया)**(28) सो** (इस बारी से लोग तंग आ गये और) **उन्होंने** (उस के क़त्ल करने के लिए) **अपने साथी** (कुदार) **को बुलाया तो उसने** (ऊंटनी पर) **वार किया और** (उसको) **मार डाला(29) सो** (देखो) **मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ(30)** (वो यह कि) **हमने उन पर एक ही चीख़** (फ़रिशते की) **भेजी सो वो** (उससे) **ऐसे हो गये जैसे कान्टों की बाड़ का चूरा** (यानी खेत की हिफ़ाज़त के लिए जो कान्टों की बाड़ लगाते हैं और कुछ दिन बाद सब चूरा-चूरा हो जाता है इसी तरह वो हलाक और तबाह हो गये)**(31) और हमने कुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है तो क्य कोई नसीहत हासिल करने वाला है(32)** (और) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम ने भी पैग़म्बरों को झुटलाया** (क्योंकि एक नबी को झुटलाना सब को झुटलाना है)**(33) हमने उन पर पत्थरों की बारिश की सिवाए लूत** (अलैहिस्सलाम) **के घर वालों के** (यानी सिवाए मोमिनों के)**, कि उन को रात के आख़री हिस्से में** (बस्ती से बाहर करके अज़ाब से) **बचा लिया था(34) अपनी तरफ़ से महरबानी करके, जो शुक्र करता है** (यानी ईमान लाता है) **हम उस को ऐसा ही बदला दिया करते** (हैं कि अज़ाब से बचा लेते) **हैं(35) और** (अज़ाब आने से पहले) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने उनको हमारी पकड़ से डराया था सो उन्होंने** (इस) **ख़बरदार करने में झगड़े पैदा किये** (यानी यक़ीन न लाए)**(36) और** (जब लूत अलैहिस्सलाम के पास हमारे फ़रिशते महमान की शक्ल में आए और उन लोगों को हसीन लड़कों के आने का पता चला तो यहां आकर) **उन लोगों ने लूत** (अलैहिस्सलाम) **से उनके महमानों को बुरी नीयत से लेना चाहा** (जिससे लूत अलैहिस्सलाम शुरू में घबराए मगर वो फ़रिशते थे) **तो हमने उन** (लोगों) **की**

आंखों को अन्धा कर दिया (और उन से कहा गया कि) **लो मेरे अज़ाब और डराने का मज़ा चक्खो(37) और** (फिर) **सुबह सवेरे ही उन पर सदा का अज़ाब आ पहुंचा(38)** (और फिर कहा गया कि) **लो मेरे डराने और अज़ाब का मज़ा चक्खो(39) और हमने कुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है(40) और** (फ़िरऔन और) **फ़िरऔन वालों के पास भी डराने की बहुत सी चीज़ें** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़े और नसीहतें) **पहुंची(41)** (लेकिन) **उन लोगों ने हमारी सारी निशानियों को झुटलाया** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम की पैग़म्बरी को झुटलाया) **तो हमने उनको ज़बरदस्त कुदरत वाले की पकड़ में पकड़ा** (यानी जब हमने उनको अज़ाब में पकड़ा तो हमारी पकड़ से उनको कोई बचा नहीं सका)(42)

नोटः- कुरआन में यह जुमला बार-बार लाया गया है कि अल्लाह के अज़ाब से बचने का रास्ता कुरआन है और कुरआन को नसीहत व सबक़ हासिल करने की हद तक हमने बहुत आसान कर दिया है। बड़ा बदनसीब और महरूम है जो इससे फ़ाइदा न उठाए।

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِى الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَ
يُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَ السَّاعَةُ اَدْهٰى وَ اَمَرُّ ﴿٤٦﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِىْ ضَلٰلٍ وَّ سُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ
يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ اِنَّا كُلَّ شَىْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَ مَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ
كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَ كُلُّ شَىْءٍ فَعَلُوْهُ فِى الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾ وَ كُلُّ صَغِيْرٍ وَّ
كَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ وَّ نَهَرٍ ﴿٥٤﴾ فِىْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

आयत नं० 43 से 55

(ये काफ़िरों के क़िस्से और कुफ़्र की वजह से उन पर होने वाले अज़ाब के क़िस्से तुमने सुन लिये अब जब कि तुम भी कुफ़्र के काम करते हो तो तुम्हारे अज़ाब से बचने की कोई वजह नहीं) **क्या तुम में जो काफ़िर हैं वो** (पहले लोगों से) **बेहतर हैं** (जिस की वजह से तुम्हें अज़ाब न हो) **या तुम्हारे लिए** (आसमानी) **किताबों में कोई मुआफ़ी** (नामा लिख दिया) **है** (इसलिए जुर्म के बावजूद सज़ा न हो)**(43) या** (उनमें कोई ऐसी ताक़त है जो उन को अज़ाब से बचा ले जैसा) **ये लोग कहते हैं कि हमारा गिरोह कामयाब रहेगा(44) जल्दी ही** (उनका) **यह गिरोह मात खाएगा और पीठ**

फेर कर भागेंगे (और यह ख़बर जंगे बद्र व अहज़ाब में पूरी हुई)(45) **बल्कि** (दुनिया के इस अज़ाब से बड़ा अज़ाब) **क़ियामत** (में होगा कि) **उनका** (असल) **वादा** (वो ही) **है और क़ियामत** (को कोई हल्की चीज़ न समझो बल्कि वो) **बड़ी सख़्त और नागवार चीज़ है**(46) (और क़ियामत ज़रूर आने वाली है इसके इनकार में) **ये मुजरिम लोग** (यानी काफ़िर) **बड़ी ग़लती और बेअक़्ली में** (पड़े) **हैं**(47) (और इस ग़लती का पता उस दिन चलेगा) **जिस दिन ये लोग अपने मुंह के बल जहन्नम में घसीटे जाएंगे,** (तो उनसे कहा जाएगा कि) **दोज़ख़** (की आग के लगने) **का मज़ा चक्खो**(48) (और अगर इनको यह शक हो कि क़ियामत अभी क्यों नहीं आ जाती तो वजह इसकी यह है कि) **हमने हर चीज़ को तय वक़्त के साथ पैदा किया है** (जिसे हम जानते हैं)(49) **और** (जब उसका वक़्त आजाएगा तो उस वक़्त) **हमारा हुक्म** (उसके बारे में) **बस ऐसा एक बारगी होगा जैसे आंख का झपकना**(50) **और** (अगर तुम को यह शक हो कि हमारा तरीक़ा अल्लाह के नज़दीक नापसन्द नहीं तो अगर क़ियामत आ भी जाए तो कोई फ़िक्र नहीं तो जान लो कि) **हम तुम्हारे तरीक़े वाले लोगों को** (अपने अज़ाब से पहले ही) **हलाक कर चुके हैं** (जो दलील है इस तरीक़े के नापसन्द होने की) **तो क्या** (इस दलील से) **कोई नसीहत लेने वाला है**(51) **और** (यह भी नहीं कि उनके बुरे कामों का पता न चले बल्कि) **जो कुछ भी ये लोग करते हैं सब** (अल्लाह तआ़ला को मालूम है) **आमाल नामों में** (भी लिखा) **है**(52) **और** (यह नहीं कि कुछ लिखा गया हो कुछ रह गया हो बल्कि) **हर छोटी और बड़ी बात** (इसमें) **लिखी हुई है**(53) (और जो) **परहेज़गार लोग** (हैं वो जन्नत के) **बाग़ों में और नहरों में होंगे**(54) **एक अच्छी जगह में क़ुदरत वाले बादशाह के पास** (यानी जन्नत के साथ अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी भी होगी)(55)

नोटः- तक़दीर के मसअले का इनकार करने वाला काफ़िर है और जो फ़िरक़े हेरफेर के साथ इनकार करते हैं वो फ़ासिक़ यानी बड़े गुनाहगार हैं। एक हदीस में है कि हर उम्मत में कुछ लोग मजूसी (आग के पुजारी) होते हैं इस उम्मते मुहम्मदिया के मजूसी वो लोग हैं जो तक़दीर का इनकार करते हैं ऐसे लोग बीमार पड़ें तो उनकी बीमार पुरसी को न जाओ और मरजाएं तो उनके कफ़न दफ़न में शरीक न हो। (रूहुल मआनी)

55-सूरत-रहमान

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '78' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلرَّحْمٰنُ ۙ﴿۱﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ؕ﴿۲﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿۴﴾ اَلشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ﴿۵﴾ وَّ النَّجْمُ وَ الشَّجَرُ
يَسْجُدٰنِ ﴿۶﴾ وَ السَّمَآءَ رَفَعَهَا وَ وَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ﴿۷﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿۸﴾ وَ اَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَ لَا
تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿۹﴾ وَ الْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۙ﴿۱۰﴾ فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۪ۙ وَّ النَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۖ﴿۱۱﴾ وَ الْحَبُّ ذُو
الْعَصْفِ وَ الرَّيْحَانُ ۚ﴿۱۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ﴿۱۴﴾ وَ خَلَقَ الْجَآنَّ
مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۚ﴿۱۵﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۶﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَ رَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ﴿۱۷﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۸﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۙ﴿۱۹﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۚ﴿۲۰﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۱﴾ يَخْرُجُ مِنْهُمَا
اللُّؤْلُؤُ وَ الْمَرْجَانُ ۚ﴿۲۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۳﴾ وَ لَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۚ﴿۲۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۧ﴿۲۵﴾

आयत नं० 01 से 25

रहमान (यानी बड़ी रहमतों वाला है वो अल्लाह जिसकी नेमतें अनगिनत हैं)(1) **सिखाया जिस ने** (अपने बन्दों को) **कुरआन** (यानी एक बड़ी नेमत यह है कि कुरआन उतारा कि उसके बन्दे उस पर ईमान लाएं और उसके हुक्मों पर चलकर सदा की ऐश व आराम का सामान हासिल करें)(2) **उसी ने इन्सान को पैदा किया**(3) (फिर) **उस को बोलना सिखाया**(4) (और उसके हुक्म से) **सूरज और चान्द हिसाब के साथ** (चलते) **हैं**(5) **और बेलदार पौधे और तनेदार पेड़ दोनो** (अल्लाह के) **ताबेदार** (हैं सूरज और चान्द का चलना तो इसलिए नेमत है कि दिन रात व सर्दी गर्मी और महीना व साल का हिसाब इसी पर है जिसके नफ़े मालूम हैं और पेड़ पौधों में अल्लाह तआला ने हज़ारों फ़ाइदे रक्खे हैं ये भी बड़ी नेमतें) **हैं**(6) **और** (एक नेमत यह है कि) **उसी ने आसमान को ऊंचा किया** (जिसके बहुत से फ़ाइदों में एक फ़ाइदा यह है कि उस को देख कर इन्सान उसके बनाने वाले की

क़ुदरत को सोचे) **और** (एक नेमत यह है कि) **उसी ने** (दुनिया में) **तराज़ू रख दी(7) ताकि तुम तोलने में कमी ज़्यादती न करो**(8) (और इस नेमत का शुक्र करो कि) **इन्साफ़ के साथ वज़न को ठीक रक्खो और तौल में कमी न करो(9) और** (एक नेमत यह है कि) **उसी ने मख़लूक़ के** (फ़ाइदे के) **वास्ते ज़मीन को बनाया(10) कि उस में फल हैं और खजूर के पेड़ हैं जिन**(के फल) **पर पर्दा** (चढ़ा) **होता है(11) और** (उसमें) **भूसे वाला अनाज और ख़ुशबूदार फल** (भी) **हैं(12) सो** (ऐ इन्सानों और जिन्नात इतनी नेमतों के बावजूद) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(13) (और एक नेमत यह है कि) **उसी ने इन्सान** (की असल यानी आदम अलैहिस्सलाम) **को ठीकरे की तरह** (खनखन) **बजती मिट्टी से पैदा किया(14) और जिन्नात** (की पहली असल) **को ख़ालिस आग से पैदा किया** (जिसमें धुआं न था फिर दोनो की नस्ल चली)(15) **तो** (इतनी नेमतों के बावजूद) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(16) (और) **वो दोनो पूरब और दोनो पच्छिम का** (सच्चा) **मालिक है** (सर्दी व गर्मी में सूरज निकलने व छुपने के किनारे बदल जाते हैं इसलिए दो पूरब व पच्छिम कहे गये और रात दिन की नेमतें इसी पर हैं)(17) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(18) (और एक नेमत यह है कि) **उसने दो दरियाओं को** (ऐसे) **मिलाया कि** (देखने में) **आपस में मिले हुए हैं**(19) (और असल में) **उन दोनो के बीच में एक** (क़ुदरती) **पर्दा है कि** (इस वजह से) **दोनो** (अपनी) **हद से बढ़ नहीं सकते**(20) **तो** (इन नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(21) (और दरियाओं की एक नेमत यह है कि) **उन दोनों से मोती और मूंगा** (यानी छोटा मोती) **निकलते हैं**(22) **तो** (ऐ इन्सानों और जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(23) **और** (एक नेमत यह है कि) **उसी के** (क़ब्ज़े में) **हैं जहाज़ जो समन्दर में पहाड़ों की तरह ऊंचे खड़े** (नज़र आते हैं उनके फ़ाइदे भी खुले) **हैं(24) तो** (इतनी नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानों और जिन्नात) **तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(25)

नोटः- इस सूरत में एक आयत "फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान" बार-बार आई है जिसको नसीहत के लिए बार-बार लाया गया है और हर बार नई बात समझाई गई है। अरबी ज़बान में इस तरह की मिसालें मिल जाती हैं कि एक बात बार-बार दोहराई जाए।

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝٢٦ وَّ يَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَ الْاِكْرَامِ ۝٢٧ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٢٨ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ۝٢٩ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٠ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ۝٣١ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٢ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝٣٣ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٤ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ نُحَاسٌ
فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝٣٥ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٦ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝٣٧ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٨ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّ لَا جَآنٌّ ۝٣٩ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٠ يُعْرَفُ
الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَ الْاَقْدَامِ ۝٤١ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٢ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ
يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝٤٣ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَ بَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ۝٤٤ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٥

आयत नं० 26 से 45

(जितनी नेमतें तुमने सुनी हैं तुम को तौहीद व ताबेदारी से उनका शुक्र अदा करना चाहिए और कुफ़्र व गुनाहों से नाशुक्री न करना चाहिए क्योंकि इस जहान के फ़ना होने के बाद दूसरा जहान आने वाला है जहां ईमान व कुफ़्र का बदला व सज़ा मिलनी है बस कहा गया कि) **जितने** (जिन्नात व इन्सान) **ज़मीन पर मौजूद हैं सब फ़ना हो जाएंगे(26) और** (सिर्फ़) **आप के रब की ज़ात जो बड़ाई वाली और अहसान** (करने) **वाली है बाक़ी रह जाएगी(27)** (और चूंकि दुनिया के फ़ना हो जाने की ख़बर देना भी इन्सान को ईमान की दौलत देता है यह भी एक बड़ी नेमत है) **तो** (ऐ जिन्नात व इन्सानो) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(28)** (वो ऐसी शान वाला है कि) **उसी से** (अपनी-अपनी ज़रूरतें) **सब आसमान व ज़मीन वाले मांगते हैं, वो हर वक़्त किसी न किसी काम में रहता** (है यानी वो हर वक़्त करम व अहसान करता रहता) **है(29)** (यह भी एक बड़ी नेमत है) **तो तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(30) ऐ जिन्नात व इन्सानों हम जल्दी ही तुम्हारे** (हिसाब के) **लिए ख़ाली हो जाते** (हैं यानी हिसाब लेने वाले) **हैं(31)** (और यह ख़बर देना भी एक नेमत है) **तो तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(32)** (और यह भी नहीं हो सकता कि कोई हिसाब की जगह से निकल जाए तो) **ऐ इन्सानों और जिन्नात के गिरोह अगर तुम से यह हो सके कि आसमान और ज़मीन की हदों से कहीं बाहर निकल जाओ तो** (हम भी देखें) **निकलो,** (मगर)

बिना ज़ोर के (निकल नहीं सकते और ज़ोर है नहीं तो) **निकल नहीं सकते(33)** (और यह बताना भी बड़ी नेमत है) **तो तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(34)** (ऐ इन्सान व जिन्नात मुजरिमो) **तुम दोनों पर** (क़ियामत के दिन) **आग का शोला और धुवां छोड़ा जाएगा फिर तुम** (उसको) **हटा न सकोगे(35)** (और यह बताना भी हिदायत के लिए एक नेमत है) **तो तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(36) जब** (क़ियामत आएगी जिस मे) **आसमान फट जाएगा और ऐसा लाल हो जाएगा जैसे लाल चमड़ा(37)** (यह ख़बर देना भी नेमत है) **तो तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(38) फिर उस दिन न किसी इन्सान से उसके गुनाह के बारे में पूछा जाएगा और न किसी जिन्न से** (बल्कि फ़रिशतों के पास सब लिखा हुआ है)**(39) सो** (यह ख़बर देना भी एक नेमत है तो) **तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(40)** (आगे बताते हैं कि फ़रिशतों को मुजरिमों को पहचानने के लिए किसी पूछताछ की ज़रूरत न होगी बल्कि) **मुजरिम लोग अपने हुलिये से पहचाने जाएंगे** (जैसे चेहरे का काला होना आंखों का नीला होना) **फिर** (उनके) **सर के बाल और पैर पकड़ लिए** (जाएंगे और घसीट कर जहन्नम में डाल दिये) **जाएंगे(41)** (और यह ख़बर देना भी एक नेमत है) **तो तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(42) यह है वो जहन्नम जिसे मुजरिम लोग** (यानी तुम) **झुटलाते थे(43) वो लोग दोज़ख़ के और गर्म खौलते हुए पानी के चक्कर लगाते** (होंगे यानी कभी आग का अज़ाब होगा और कभी खौलते पानी के अज़ाब में) **होंगे(44)** (और यह ख़बर देना भी नेमत है) **तो** (इन तमाम नेमतों के बावजूद ऐ जिन्नात व इन्सानो) **तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(45)**

नोटः- एक हदीस में है कि अपनी दुआ में "या ज़लजलालि वल इकराम" को याद रक्खो और उसके साथ दुआ किया करो (क्योंकि उससे दुआ के क़ुबूल होने की ज़्यादा उम्मीद है) । (मज़हरी)

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۝٤٦ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٧ ذَوَاتَاۤ اَفْنَانٍ ۝٤٨ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝٤٩ فِیْهِمَا عَیْنٰنِ تَجْرِیٰنِ ۝٥٠ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥١ فِیْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۝٥٢ فَبِاَیِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥٣ مُتَّكِـِٕیْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآىِٕنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَیْنِ دَانٍ ۝٥٤ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝٥٥ فِیْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ یَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝٥٦ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥٧

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ﴿٦٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَامَّتَانِ ﴿٦٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ﴿٦٥﴾ فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ﴿٦٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٧﴾ فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٩﴾ فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧١﴾ حُورٌ مَقْصُورَاتٌ فِي
الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٧﴾ تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ
ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

आयत नं० 46 से 78

और (आगे जन्नती लोगों का बयान है कि जन्नती लोग दो क़िस्म के हैं ख़ास और आम बस) **जो आदमी** (ख़ास मोमिनों में से हो और) **अपने रब के सामने खड़ा होने से** (हर वक़्त) **डरता रहता हो** (और डर कर गुनाहों से बचता रहता हो और यह शान ख़ास मोमिनों की ही है मतलब यह कि जो ऐसा परहेज़गार हो) **उसके लिए** (जन्नत में) **होंगे** (दो बाग़ यानी हर परहेज़गार के लिए) **दो बाग़(46) तो** (ऐ इन्सानो व जिन्नात इतनी नेमतों के बावजूद) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(47)** (और वो) **दोनो बाग़ टहनियों से भरे** (होंगे यानी घना साया भी होगा और फल भी ज़्यादा) **होंगे(48) तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(49)** (और) **उन दोनो बाग़ों में दो नहरें** (पानी की) **बहती होंगी(50) तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(51)** (और) **उन दोनो बाग़ों में हर फल की दो क़िस्में होंगी** (कि इसमें ज़्यादा मज़ा है कभी एक क़िस्म का मज़ा लिया कभी दूसरी क़िस्म का)**(52) तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(53)** (और) **वो लोग तकिया लगाए रेशमी क़ालीनों पर बैठे होंगे, और दोनों बाग़ों का फल बहुत नज़दीक होगा** (कि खड़े, बैठे लेटे हर तरह आसानी से हाथ आसकता है)**(54) तो** (इतनी नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(55)** (और) **उन** (बाग़ों के मकानों और महलों) **में नीची निगाह वाली** (यानी हूरें) **होंगी कि उन** (जन्नती) **लोगों से पहले जिन्हें न तो किसी इन्सान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न ने** (यानी कुंवारी होंगी)**(56) तो** (ऐ इन्सानो व

जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(57) (और रंग उन का ऐसा साफ़ होगा कि) **जैसे वो हीरा मोती हैं**(58) **तो** (ऐ इन्सानो व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(59) **अच्छाई का बदला सिवाए अच्छाई के और क्या हो सकता है** (उन्होंने नेक काम किये इसलिए अच्छा बदला मिला)(60) **तो** (इतनी नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(61) **और** (आगे आम मोमिनों के बाग़ों का बयान है यानी) **उन दोनो बाग़ों से कम दर्जे में दो बाग़ और हैं** (जो आम मोमिनों के लिए हैं और हर एक को दो दो मिलेंगे)(62) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(63) (और आगे उन बाग़ों की ख़ूबी का बयान है कि) **वो दोनो बाग़ गहरे हरे रंग के होंगे**(64) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(65) **उन दोनो बाग़ों में दो चश्मे होंगे कि जोश मारते होंगे** (यानी ऐसे कुंवे कि उनका पानी खुद उबल रहा होगा)(66) **तो** (ऐ इन्सानों और जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(67) **उन दोनो बाग़ों में फल और खजूरें और अनार होंगे**(68) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(69) (और) **उन** (बाग़ों के मकानों में) **अच्छी** (आदत वाली) **ख़ूबसूरत औरतें** (यानी) **हूरें होंगी**(70) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात इतनी नेमतों के बावजूद) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(71) **वो औरतें गोरे रंग वाली होंगी** (और) **ख़ेमों** (यानी मकानों) **में हिफ़ाज़त से रक्खी हुई होंगी**(72) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(73) (और) **इन** (जन्नती) **लोगों से पहले जिन्हें न तो किसी इन्सान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न ने** (यानी कुंवारी होंगी)(74) **तो** (इतनी नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानो व जिन्नात) **तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(75) (और) **वो** (जन्नती) **लोग हरे रंग के कामदार ख़ूबसूरत कपड़ों** (के क़ालीनों) **पर तकिया लगाए बैठे होंगे**(76) **तो** (इतनी नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(77) **बड़ा बरकत वाला नाम है आप के रब का जो बड़ाई वाला** (भी है) **और अहसान** (करने) **वाला** (है तो उसकी ज़ात कैसी होगी जिसका नाम ही बरकतों वाला) **है**(78)

नोटः- अपने रब के सामने खड़ा होने से मुराद यह है कि हर वक़्त इस बात का ध्यान रखता हो कि मेरे हर काम को अल्लाह तआ़ला देख रहे हैं। इसे मुराक़िबा कहते हैं।

56-सूरत-वाक़िआः

इस मक्की सूरत में ‘3’ रूकू और ‘96’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَّبُسَّتِ
الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾ فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْبَثًّا ﴿٦﴾ وَّكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾ فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَا أَصْحٰبُ
الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾ وَأَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ مَا أَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ﴿٩﴾ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ﴿١٠﴾ أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿١١﴾ فِيْ
جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٤﴾ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿١٥﴾ مُّتَّكِـِٔيْنَ عَلَيْهَا
مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ﴿١٧﴾ بِأَكْوَابٍ وَّأَبَارِيْقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿١٨﴾ لَّا
يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢١﴾ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٢﴾
كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٣﴾ جَزَاءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيْمًا ﴿٢٥﴾ إِلَّا قِيْلًا
سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَأَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَا أَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٧﴾ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ﴿٢٨﴾ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ﴿٢٩﴾ وَّظِلٍّ
مَّمْدُوْدٍ ﴿٣٠﴾ وَّمَاءٍ مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ إِنَّا
أَنْشَأْنٰهُنَّ إِنْشَاءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾ عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّأَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَ
ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَأَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَا أَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ
يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ إِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ
الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَإِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾ أَوَاٰبَاؤُنَا الْأَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ
إِنَّ الْأَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ إِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ
الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾
فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾

आयत नं० 01 से 56

जब क़ियामत आएगी(1) जिसके आने में कोई झूट नहीं (बल्कि उस का आना बिल्कुल सही और सच है)(2) **तो वो** (कुछ को) **नीचा कर देगी** (और कुछ को) **ऊंचा कर** (देगी यानी काफ़िरों की रूसवाई और मोमिनों की इज़्ज़त उस दिन दिखाई) **देगी(3) जब कि ज़मीन को सख़्त ज़लज़ला आएगा(4) और पहाड़ बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाएंगे(5) फिर वो उड़ती हुई धूल बन जाएंगे(6) और तुम** (सब लोग जो इस वक़्त मौजूद हो या पहले हो चुके हैं या बाद में आने वाले हैं सब) **तीन क़िस्म के हो जाओगे** (ख़ास मोमिन, आम मोमिन और काफ़िर लोग)(7) **तो** (उन में एक) **जो दाहिने वाले हैं कैसे अच्छे हैं दाहिने वाले** (यानी जिनके आमाल नामे दाहिने हाथ में दिये जाएंगे यानी आम मोमिन लोग ख़ास भी उनमें शामिल हैं मगर उन का बयान अलग से है)(8) **और** (दूसरे) **जो बाएं वाले हैं वो बाएं वाले कैसे बुरे हैं** (यानी जिनके आमाल नामे बाएं हाथ में दिये जाएंगे यानी काफ़िर लोग)(9) **और** (तीसरे) **जो ऊंचे दर्जे के हैं वो तो ऊंचे दर्जे के ही हैं(10)** (और) **वो** (अल्लाह तआ़ला के साथ) **नज़दीकी रखने वाले** (हैं इसमें सभी ऊंचे दर्जे के नेक लोग दाख़िल) **हैं(11) ये** (अल्लाह के नज़दीकी) **लोग आराम के बाग़ों में होंगे(12) इन का बड़ा गिरोह तो पहले लोगों में से होगा(13) और थोड़े बाद के लोगों में से होंगे** (पहले लोगों से मुराद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले के लोग और बाद वालों से मुराद बाक़ी क़ियामत तक के लोग)(14) **वो** (अल्लाह के नज़दीकी) **लोग सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर(15) तकिया लगाए आमने-सामने बैठे होंगे(16) और उनके पास** (ख़िदमत के लिए) **ऐसे लड़के फिरते होंगे जो सदा लड़के ही रहेंगे(17)** (वो लड़के आते जाते होंगे) **ऐसी शराब के पियाले, जग और जाम लेकर(18) जिससे उन को न सर दर्द होगा और न उस से उनके होश उड़ेंगे(19) और ऐसे फल जिन को वो पसन्द करें(20) और परिन्दों का गोश्त जो वो चाहेंगे(21) और उनके लिए गोरी-गोरी बड़ी आंखों वाली औरतें** (यानी हूरें) **होंगी(22)** (जिन का रंग ऐसा साफ़ होगा) **जैसे** (हिफ़ाज़त से) **छुपा कर रक्खा हुआ मोती(23) यह बदला होगा उनके नेक कामों का(24)** (और वो) **उस** (जन्नत) **में न बकवास सुनेंगे न बेहूदा बात** (सुनेंगे यानी शराब पीकर या वैसे भी ऐसी चीज़ें न पाई जाएंगी जो नागवारी हो)(25) **बस** (हर तरफ़ से) **सलाम ही सलाम की आवाज़ आएगी** (जो कि दलील इज़्ज़त और ख़ुशी की है)(26) **और जो दाहिने वाले हैं वो दाहिने वाले कैसे अच्छे होंगे(27) वो उन बाग़ों में होंगे जहां बिना कांटों की बेरियां होंगी(28) और तह पर तह केले होंगे(29) और लम्बा-लम्बा साया होगा(30) और बहता हुआ**

पानी होगा(31) और बहुत सारे फल होंगे(32) जो न ख़त्म होंगे (जैसे दुनिया के फल फ़सल पूरी होने पर ख़त्म हो जाते हैं) **और न उन को रोक टोक होगी** (जैसे दुनिया में बाग़ वाले उसकी रोकथाम करते हैं)(33) **और ऊंचे-ऊंचे फ़र्श होंगे** (जिन पर बैठेंगे)(34) **हम ने** (वहां की) **उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है(35) यानी हमने उनको ऐसा बनाया है कि वो कुंवारियां हैं** (यानी मर्द से मिलाप के बाद फिर कुंवारी हो जाएंगी)(36) **मुहब्बत करने वाली** (और जन्नत वालों की) **हम उम्र हैं(37) ये सब चीज़ें दाहिने वालों के लिए हैं(38) इन** (दाहिने वालों) **का एक बड़ा गिरोह पहले लोगों में से होगा(39) और एक बड़ा गिरोह बाद वाले लोगों में से होगा(40) और** (आगे काफ़िरों और उनके अज़ाब का बयान है कि) **जो बाएं वाले हैं वो बाएं वाले कैसे बुरे हैं(41) वो लोग आग में होंगे और खौलते हुए पानी में(42) और काले धुंए के साये में(43) जो न ठन्डा होगा और न आराम देने वाला होगा** (यानी साये से आराम व ठन्डक और ख़ुशी मिलती है मगर उस में न होगी)(44) **वो लोग इससे पहले** (यानी दुनिया में) **बड़ी ख़ुशहाली में रहते थे(45) और** (इसलिए) **बड़े भारी गुनाह** (यानी शिर्क व कुफ़्र) **पर जमे रहते** (थे मतलब यह कि ईमान नहीं लाते) **थे(46) और यह कहा करते थे कि जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां** (होकर) **रह गये तो क्या** (इसके बाद) **हम दोबारा ज़िन्दा किये जाएंगे(47) और क्या** (ज़िन्दा होंगे) **हमारे पहले बाप दादे भी(48)** (और यह सवाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के काफ़िर लोग भी करते थे इसलिए कहा गया कि ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि सब पहले और बाद वाले लोग(49) जमा किये जाएंगे एक तय दिन के वक़्त पर(50) फिर** (जमा होने के बाद) **तुम को ऐ गुमराहो झुटलाने वालो(51) ज़क़्क़ूम** (नाम के) **पेड़ से खाना होगा(52) फिर उससे पेट भरना होगा(53) फिर उस पर खौलता हुआ पानी पीना होगा(54) फिर पीना भी प्यासे ऊंटो का सा(55)** (बस) **उन लोगों की क़ियामत के दिन यह महमानी होगी(56)।**

नोटः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि "जो आदमी हर रात में सूरत वाक़िआः पढ़ा करे उसको कभी फ़ाक़ा नहीं होगा"। (इब्ने कसीर)

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿۵۷﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿۵۸﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿۵۹﴾ نَحْنُ
قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿۶۰﴾ عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۱﴾ وَ
لَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۶۲﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿۶۳﴾ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ
الزّٰرِعُوْنَ ﴿۶۴﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿۶۵﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿۶۷﴾
اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿۶۸﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿۶۹﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا
فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۰﴾ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿۷۱﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَاۤ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿۷۲﴾ نَحْنُ
جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿۷۳﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿۷۴﴾

आयत नं० 57 से 74

हमने तुम को (पहली बार) **पैदा किया है** (जिस को तुम भी मानते हो) **तो फिर तुम** (तौहीद और क़ियामत की) **तस्दीक़ क्यों नहीं करते**(57) **अच्छा फिर यह बताओ तुम जो** (औरतों की बच्चे दानी में) **मनी** (की बून्द) **पहुंचाते हो**(58) **उस को तुम** (इन्सान) **बनाते हो या हम बनाने वाले** (हैं और साफ़ बात है कि हम ही बनाने वाले) **हैं**(59) **और हम ही ने तुम्हारे बीच में मौत को** (तय वक़्त पर) **ठहरा रक्खा है** (मतलब यह कि बनाना और उस बनाए हुए को ख़ास वक़्त तक बाक़ी रखना यह सब हमारा ही काम है) **और हम इससे लाचार नहीं हैं**(60) **कि तुम्हारी जगह तो तुम जैसे और** (आदमी) **पैदा कर दें और तुम को ऐसी सूरत बनादें जिन को तुम जानते भी** (नहीं यानी जैसे आदमी से जानवर की सूरत में बदल देना जिस का गुमान भी) **नहीं**(61) **और तुम अपनी पहली पैदाइश को जानते हो** (कि वो हमारी क़ुदरत से है) **फिर तुम क्यों नहीं समझते** (कि समझ कर इस नेमत का शुक्र अदा करो और क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होने का भी यक़ीन करलो)(62) **अच्छा फिर यह बताओ तुम जो कुछ** (बीज वग़ैरह ज़मीन में) **बोते हो**(63) **उस को तुम उगाते हो या हम उगाने वाले हैं** (यानी ज़मीन में बीज डालने में तो तुम्हारा कुछ हाथ है भी लेकिन उसको ज़मीन से निकालना यह किसका काम है)(64) **अगर हम चाहें तो उस** (पैदावार) **को चूरा-चूरा कर डालें फिर तुम भोंचक्के रह जाओ**(65) **कि** (अब के तो) **हम पर तावान ही पड़ गया** (यानी लागत भी गई)(66) **बिल्कुल ही महरूम रह** (गये यानी बेनसीब हो) **गये**(67) **अच्छा यह बताओ कि जिस पानी को तुम पीते हो**(68) **उस को बादलों से तुम बरसाते हो या हम**

बरसाने वाले हैं(69) (फिर उस पानी को पीने के क़ाबिल बनाना हमारी दूसरी नेमत है कि) **अगर हम चाहें उस को कड़वा कर डालें तो तुम शुक्र क्यों नहीं करते** (और बड़ा शुक्र तौहीद का यक़ीन व कुफ़्र का छोड़ना है)(70) **अच्छा फिर यह बताओ जिस आग को तुम सुलगाते हो**(71) **उस के पेड़ को** (या जिन चीज़ों से यह आग पैदा होती है उन चीज़ों को) **तुम ने पैद किया है या हम पैदा करने वाले हैं**(72) **हमने उस** (आग) **को** (दोज़ख़ की आग या अपनी क़ुदरत की) **यादगारी की चीज़** (बनाया है) **और मुसाफ़िरों** (और सब लोगों) **के लिए फ़ाइदे की चीज़ बनाया है**(73) **तो** (जिस की ऐसी क़ुदरत है) **अपने** (उस) **बड़ी शान वाले रब की तस्बीह कीजिए**(74)।

فَلَآ اُقۡسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوۡمِ ﴿۷۵﴾ وَ اِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوۡ تَعۡلَمُوۡنَ عَظِيۡمٌ ﴿۷۶﴾ اِنَّهٗ لَقُرۡاٰنٌ كَرِيۡمٌ ﴿۷۷﴾ فِىۡ كِتٰبٍ مَّكۡنُوۡنٍ ﴿۷۸﴾
لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الۡمُطَهَّرُوۡنَ ﴿۷۹﴾ تَنۡزِيۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۸۰﴾ اَفَبِهٰذَا الۡحَدِيۡثِ اَنۡتُمۡ مُّدۡهِنُوۡنَ ﴿۸۱﴾ وَ تَجۡعَلُوۡنَ
رِزۡقَكُمۡ اَنَّكُمۡ تُكَذِّبُوۡنَ ﴿۸۲﴾ فَلَوۡلَاۤ اِذَا بَلَغَتِ الۡحُلۡقُوۡمَ ﴿۸۳﴾ وَ اَنۡتُمۡ حِيۡنَئِذٍ تَنۡظُرُوۡنَ ﴿۸۴﴾ وَ نَحۡنُ اَقۡرَبُ اِلَيۡهِ
مِنۡكُمۡ وَلٰـكِنۡ لَّا تُبۡصِرُوۡنَ ﴿۸۵﴾ فَلَوۡلَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ غَيۡرَ مَدِيۡنِيۡنَ ﴿۸۶﴾ تَرۡجِعُوۡنَهَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۸۷﴾ فَاَمَّاۤ اِنۡ
كَانَ مِنَ الۡمُقَرَّبِيۡنَ ﴿۸۸﴾ فَرَوۡحٌ وَّ رَيۡحَانٌ ۙ وَّ جَنَّتُ نَعِيۡمٍ ﴿۸۹﴾ وَ اَمَّاۤ اِنۡ كَانَ مِنۡ اَصۡحٰبِ الۡيَمِيۡنِ ﴿۹۰﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ
مِنۡ اَصۡحٰبِ الۡيَمِيۡنِ ﴿۹۱﴾ وَ اَمَّاۤ اِنۡ كَانَ مِنَ الۡمُكَذِّبِيۡنَ الضَّآلِّيۡنَ ﴿۹۲﴾ فَنُزُلٌ مِّنۡ حَمِيۡمٍ ﴿۹۳﴾ وَّ تَصۡلِيَةُ
جَحِيۡمٍ ﴿۹۴﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الۡيَقِيۡنِ ﴿۹۵﴾ فَسَبِّحۡ بِاسۡمِ رَبِّكَ الۡعَظِيۡمِ ﴿۹۶﴾

आयत नं० 75 से 96

(और तुम जो इस क़ुरआन को नहीं मानते जिसमें क़ियामत में ज़िन्दा हेकर उठने की ख़बर है) **तो मैं क़सम खाता हूं सितारों के छुपने की**(75) **और अगर तुम समझो तो यह एक बड़ी क़सम है**(76) (और क़सम इस बात की खाता हूं कि) **यह** (क़ुरआन जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरता है अल्लाह की तरफ़ से उतरने की वजह से) **बड़ी इज़्ज़त वाला क़ुरआन है**(77) **जो एक हिफ़ाज़त की किताब** (यानी तक़दीर की किताब) **में** (पहले से) **लिखा है**(78) (और वो किताब ऐसी है कि) **सिवाए उसको पाक फ़रिशतों के** (कि गुनाहों से बिल्कुल पाक हैं) **कोई** (शैतान वग़ैरह) **हाथ नहीं लगाने पाता** (इस की आयतों पर ख़बरदार होना तो दूर की बात है बस वहां से आना ख़ास फ़रिशते ही के वास्ते से है और ये ही पैग़म्बरी है और शैतान इसको ला नहीं सकते)(79)

बस (साबित हुआ कि) **यह सारे जहानों के रब का भेजा हुआ है(80) तो** (जब इसका अल्लाह की तरफ़ से आना साबित है तो) **क्या तुम लोग इस कलाम से बेपरवाई करते हो** (और इसकी तस्दीक़ नहीं करते)(81) **और तुमने इसी को अपना रोज़गार बना लिया है कि** (इस को) **झुटलाते** (हो और तौहीद व क़ियामत का भी इनकार करते) **हो(82) तो** (अगर यह इनकार सच है तो) **जिस वक़्त** (मरने के नज़दीक किसी आदमी की) **रूह हलक़ तक आ पहुंचती है(83) और तुम उस वक़्त** (पास बैठे मजबूर) **तका करते हो(84) और हम** (उस वक़्त) **उस** (मरने वाले) **आदमी के तुम से भी ज़्यादा नज़दीक होते** (हैं यानी तुम से भी ज़्यादा उस आदमी के हाल को जानते हैं क्योंकि तुम सिर्फ़ बाहरी हालत को देखते हो और हम उस की अन्दर की हालत को भी जानते) **हैं लेकिन तुम** (इस बात को अपनी जहालत व कुफ़्र की वजह से) **समझते नहीं हो(85) तो** (असलीयत में) **अगर तुम्हारा हिसाब-किताब होने वाला नहीं है** (जैसा तुम समझते हो)(86) **तो तुम उस रूह को** (बदन की तरफ़) **फिर क्यों नहीं लौटा लाते हो** (जिस की उस वक़्त तुम को तमन्ना भी हुआ करती है) **अगर** (इस क़ियामत के इनकार में) **तुम सच्चे हो(87)** (यह तो साबित हो चुका कि क़ियामत अपने वक़्त पर ज़रूर आएगी) **फिर** (जब क़ियामत आएगी तो) **जो आदमी अल्लाह का नज़दीकी होगा** (जिनका ऊपर बयान हुआ है)(88) **उसके लिए तो चैन है और** (इ़ज़्ज़त की) **रोज़ी और आराम की जन्नत है(89) और जो आदमी दाहिने वालों में से होगा** (जिनका ऊपर ज़िक्र आया है)(90) **तो उस से कहा जाएगा कि तेरे लिए** (हर आफ़त और ख़तरे से) **सलामती है कि तू दाहिने वालों में से है(91) और जो आदमी झुटलाने वालों** (और) **गुमराहों में से होगा(92) तो खौलते हुए पानी से उसकी दावत होगी(93) और दोज़ख़ में दाख़िल होना होगा(94) बेशक यह** (जो कुछ बताया गया) **बिल्कुल सच** (और) **यक़ीनी बात है(95) तो** (जिस की ऐसी क़ुदरत है) **अपने** (उस) **बड़ी शान वाले रब के नाम की तस्बीह कीजिए(96)।**

नोटः- एक हदीस में है कि क़ुरआन को वो आदमी न छुए जो पाक न हो । (इब्ने कसीर)

मसअलाः- बेवुज़ू या नापाकी की हालत में क़ुरआन को छूना जाइज़ नहीं अलबत्ता बेवुज़ू बिना छुए पढ़ना जाइज़ है लेकिन नापाकी की हालत में पढ़ना भी जाइज़ नहीं । (मज़हरी)

मसअलाः- क़ुरआन मजीद का ग़िलाफ़ जो जिल्द के साथ सिला हुआ हो उसको भी बिना वुज़ू हाथ

लगाना जाइज़ नहीं अलबत्ता कुरआन मजीद का जुज़दान जो अलग कपड़े का होता है अगर उसमें कुरआन बन्द है तो उस जुज़दान के साथ कुरआन करीम को हाथ लगाना बिना वुज़ू इमाम अबु हनीफ़ा रह० के नज़दीक जाइज़ है मगर इमाम मालिक रह० और इमाम शाफ़ई रह० के नज़दीक ये भी नाजाइज़ है । (मज़हरी)

मसअलाः- जो कपड़ा आदमी ने पहना हुआ है उसकी आसतीन या दामन से कुरआन मजीद को बिना वुज़ू छूना जाइज़ नहीं । अलबत्ता अलग रूमाल या चादर से छुआ जा सकता है । (मज़हरी)

57-सूरत-हदीद

इस मदनी सूरत में ‘4’ रूकू और ‘29’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٣ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا
يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٤ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٥ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۭ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٦

आयत नं० 01 से 06

अल्लाह की तस्बीह करते हैं सब जो कुछ आसमानों और ज़मीन में (मख़लूक़) **हैं, और वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **हिकमत वाला है(1) उसी का राज है आसमानों और ज़मीन में, वो ही ज़िन्दगी देता है और** (वो ही) **मौत देता है, और वो ही हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाला है(2) वो ही** (सब मख़लूक़ से) **पहले है और वो ही** (सब के फ़ना होने के) **बाद** (भी रहेगा) **और वो ही** (अपने वजूद के सबूतों से) **सामने है और वो ही** (अपनी ज़ात में बहुत) **छुपा है** (यानी कोई उस की ज़ात को नहीं जान सकता), **और वो हर चीज़ का पूरी तरह जानने वाला है(3)** (और) **वो ऐसा** (क़ुदरत वाला) **है कि उसने आसमान और ज़मीन को छः दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा किया फिर अर्श पर** (अपनी शान के लाइक़) **क़ाइम हुआ,** (और) **वो सब कुछ जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर दाख़िल होती है** (जैसे बारिश) **और जो चीज़ उसमें से निकलती है** (जैसे पेड़ पौधे) **और जो चीज़ आसमान से उतरती है और जो चीज़ चढ़ती है** (जैसे फ़रिशते उतरते चढ़ते हैं और हुक्म जो उतारे जाते हैं और बन्दों के किये काम और इबादतें

चढ़ते हैं), **और वो** (हर बात की ख़बर रखता है और हर वक़्त) **तुम्हारे साथ रहता है चाहे तुम लोग कहीं भी हो** (यानी तुम किसी जगह उससे छुप नहीं सकते), **और वो तुम्हारे सब कामों को भी देखता है(4) उसी की हुकूमत है आसमानों और ज़मीन की, और अल्लाह की तरफ़ सब काम लौट जाएंगे** (यानी क़ियामत में पेश हो जाएंगे इसी में तौहीद के साथ क़ियामत का भी सबूत हो गया)(5) **वो ही रात** (के कुछ हिस्से) **को दिन में दाख़िल करता है** (जिससे दिन बड़ा हो जाता है) **और वो ही दिन** (के कुछ हिस्से) **को रात में दाख़िल करता** (है जिस से रात बड़ी हो जाती) **है, और** (इस कुदरत के साथ उसका इल्म ऐसा है कि) **वो दिलों की बातों** (तक) **को जानता है(6)**

नोटः- सूरत "हदीद" से लेकर सूरत "तग़ाबुन" तक पांचों सूरतों को मुसब्बिहात कहते हैं । तिरमिज़ी में हज़रत अरबाज़ रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को सोने से पहले ये मुसब्बिहात पढ़ा करते थे।

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ اَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ
كَبِيْرٌ ۝٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ
لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٩ وَ مَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ
اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ
الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١٠ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَ لَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝١١ ع

आयत नं० 07 से 11

तुम लोग अल्लाह पर और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और (ईमान लाकर) **जिस माल में तुम को उसने दूसरों का वारिस बनाया है उसमें से** (उसकी राह में) **ख़र्च** (करो इस में इस तरफ़ इशारा है कि यह माल तुम से पहले किसी और के पास था और तुम्हारे बाद किसी दूसरे के पास चला जाएगा बस जब यह सदा रहने वाली चीज़ नहीं तो इस को जोड़-जोड़ कर रखने से बेहतर है कि ज़रूरी कामों में ख़र्च) **करो, तो** (इस हुक्म के मुवाफ़िक़) **जो लोग तुम में से ईमान ले आएं और** (ईमान लाकर अल्लाह की राह में) **ख़र्च करें उन को बड़ा सवाब है(7) और** (जो लोग ईमान

न लाएं उनसे हम पूछते हैं कि) **तुम्हारे लिए कौन सी वजह है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते** (इसी में पैग़म्बर पर ईमान लाना भी आगया) **हालांकि** (ईमान लाने के सबूत मौजूद हैं वो यह कि) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन की पैग़म्बरी दलीलों से साबित है) **तुम को इस बात की तरफ़ बुला रहे हैं कि तुम अपने रब पर** (उसी के बताए तरीक़े पर) **ईमान लाओ और** (दूसरी बात यह कि) **ख़ुद अल्लाह ने तुम से** (ईमान लाने का मीसाक़ में) **एहद लिया था** (जिसका कुछ असर तुम्हारी फ़ितरत में भी मौजूद है और अल्लाह के रसूल जो कि मोजिज़े और दलीलें लेकर आए उन्होंने भी इसको याद दिलाया तो) **अगर तुम को ईमान लाना** (हो तो ये सबूत काफ़ी हैं वर्ना फिर ईमान लाने के लिए किस बात का इन्तिज़ार करते) **हो**(8) (और) **वो ऐसा** (महरबान) **है कि अपने** (ख़ास) **बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर साफ़-साफ़ आयतें भेजता है ताकि वो** (ख़ास बन्दा) **तुम को** (कुफ़्र व जहालत के) **अन्धेरों से** (ईमान और इल्म की) **रौशनी की तरफ़ लाए, और बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारा हमदर्द और तुम पर महरबान है** (कि उसने ऐसा अन्धेरियों से निकालने वाला तुम्हारी तरफ़ भेजा)(9) **और तुम्हारे लिए कौन सी वजह है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते हालांकि सब आसमान व ज़मीन आख़ीर में अल्लाह ही का रह जाएगा** (जब सब मालिक मर जाएंगे और वो ही रह जाएगा बस जब सब माल एक दिन छोड़ना है तो ख़ुशी से क्यों न दिया जाए कि सवाब भी हो, आगे ख़र्च करने वालों के दर्जों का बयान है कि) **जो लोग मक्के की जीत से पहले** (अल्लाह के रास्ते में) **ख़र्च कर चुके और** (अल्लाह के रास्ते में) **लड़ चुके** (और जो कि मक्के की जीत के बाद लड़े और ख़र्च किया दोनो) **बराबर नहीं,** (बल्कि) **वो लोग दर्जे में उन लोगों से बड़े हैं जिन्होंने** (मक्के की जीत के) **बाद में ख़र्च किया और लड़े, और** (वैसे) **अल्लाह तआ़ला ने भलाई** (यानी सवाब) **का वादा सब से कर रक्खा है, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है** (इसलिए सवाब दोनो वक़्त के कामों पर देंगे)(10) **कोई आदमी है जो अल्लाह तआ़ला को अच्छी तरह** (यानी सच्चे मन से) **क़र्ज़ के तौर पर दे फिर अल्लाह तआ़ला उस** (दिये हुए सवाब) **को उस आदमी के लिए बढ़ाता चला जाए और उसको इज़्ज़त का सवाब मिले**(11)।

नोटः- अल्लाह तआ़ला ने लोगों के पैदा होने से पहले ही वजूद में आने वाली सभी रूहों को जमा करके उनसे अपने रब और माबूद होने का इक़रार और एहद लिया था इसको मीसाक़ कहते हैं जिसका ज़िक्र क़ुरआन में ''अलस्तु बिरब्बिकुम क़ालू बला'' अलफ़ाज़ में आया है।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۲﴾ يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ
بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَ ظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿۱۳﴾ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ لٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ
اَنْفُسَكُمْ وَ تَرَبَّصْتُمْ وَ ارْتَبْتُمْ وَ غَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ غَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْيَوْمَ لَا
يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّ لَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾ اَلَمْ يَاْنِ
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَ مَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَ لَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ
فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَ الْمُصَّدِّقٰتِ وَ اَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ
لَهُمْ وَ لَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۸﴾ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖۗ وَ الشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ
لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَ نُوْرُهُمْ ؕ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۹﴾

आयत नं० 12 से 19

(वो दिन भी याद कीजिए) **जिस दिन आप मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को देखेंगे कि उनका नूर उनके आगे और उनके दाहिनी तरफ़ दौड़ता** (होगा यह नूर पुलसिरात पर से गुज़रने के लिए उन के साथ) **होगा** (और उनसे कहा जाएगा कि) **आज तुम्हें ख़ुशख़बरी है ऐसे बाग़ों की जिनके नीचे नहरें बहती होंगी जिनमें वो सदा रहेंगे,** (और) **यह बड़ी कामयाबी है (12)** (और यह वो दिन होगा) **जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मुसलमानों से** (पुलसिरात पर) **कहेंगे कि** (ज़रा) **हमारा इन्तिज़ार करलो कि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रौशनी हासिल करलें** (यह उस वक़्त होगा जब कि मुसलमान अपने किये कामों व ईमान की बरकत से बहुत आगे बढ़ जाएंगे और मुनाफ़िक़ अन्धेरे में पीछे रह जाएंगे वो मुसलमानों से ठहरने के लिए कहेंगे) **उन को जवाब दिया जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ फिर** (वहां से) **रौशनी तलाश करो** (यानी जहां नूर बांटा गया था वहां जाकर लो वो उधर जाएंगे जब वहां भी कुछ न मिलेगा फिर इधर ही आएंगे), **फिर** (मुसलमानो के पास न पहुंच सकेंगे बल्कि) **उन के** (और मुसलमानों के) **बीच में**

एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा (भी) **होगा, जिसके अन्दर की तरफ़ रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा** (यानी अन्दर की तरफ़ जन्नत और बाहर की तरफ़ दोज़ख़ होगी)(13) **ये** (मुनाफ़िक़) **उन** (मुसलमानों) **को पुकारेंगे कि क्या** (दुनिया में) **हम तुम्हारे साथ न थे** (यानी दीन के कामों और इबादतों में तुम्हारे साथ रहा करते थे तो आज भी दोस्ती करना चाहिए), **वो** (मुसलमान) **कहेंगे कि** (हां) **थे तो सही लेकिन** (ऐसा होना किस काम का क्योंकि सिर्फ़ दिखावे में साथ थे और दिल की हालत तुम्हारी यह थी कि) **तुम ने अपने को गुमराही में फंसा रक्खा था और** (वो गुमराही यह थी कि तुम पैग़म्बर और मुसलमानो से दुशमनी रखते थे और उन पर मुसीबत आने के) **तुम इन्तिज़ार** (और तमन्ना) **में रहा करते थे और** (इस्लाम के सच्चा दीन होने में) **तुम शक करते थे और तुम को तुम्हारी झूटी तमन्नाओं ने धोके में डाल रक्खा था** (कि इस्लाम मिट जाएगा और यह कि हमारा मज़हब सच्चा है) **यहां तक कि तुम पर अल्लाह का हुक्म आपहुंचा** (यानी मौत आ पहुंची और तौबा भी न की) **और तुम को धोका देने वाले** (यानी शैतान) **ने अल्लाह के साथ धोके में डाल रक्खा था** (वो यह कि अल्लाह तआ़ला हमारी पकड़ न करेगा बस इन कुफ़्र की बातों की वजह से तुम्हारा दिखावे का साथ बख़शिश के लिए काफ़ी नहीं)(14) **बस आज न तुम से कोई बदला लिया जाएगा और न काफ़िरों से** (एक तो बदला देने के लिए तुम्हारे पास कोई चीज़ है नहीं लेकिन मानलो अगर होती तब भी जुर्माने में न ली जाती क्योंकि यह फ़ैसले की जगह है इबादतों की नहीं, और) **तुम सब का ठिकाना दोज़ख़ है, वो ही तुम्हारी** (सदा के लिए) **साथी है, और वो** (असल में) **बुरा ठिकाना है**(15) **क्या ईमान वालों** (में से जो लोग ज़रूरी इबादतों में कमी करते हैं जैसे गुनाहगार मुसलमान उन) **के लिए** (अब भी) **इस बात का वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की नसीहत और जो सच्चा दीन** (अल्लाह की तरफ़ से) **उतरा है उसके सामने झुक जाएं** (यानी दिल से ज़रूरी इबादतों की पाबन्दी और गुनाहों के छोड़ने का इरादा कर लें) **और उन लोगों की तरह न हो जाएं जिनको इनसे पहले** (आसमानी) **किताब मिली थी** (यानी यहूदी व ईसाई कि वो अपनी किताबों को छोड़ कर गुनाहों में लग गये) **फिर** (उसी हालत में) **उन को एक लम्बा ज़माना गुज़र गया** (और तौबा न की) **फिर** (इस तौबा न करने से) **उन के दिल** (बहुत ही) **सख़्त हो गये** (कि पछतावा भी न होता था), **और** (इस की नौबत यहां तक पहुंची कि उसी सख़्ती की वजह से) **बहुत से आदमी उनके** (आज) **काफ़िर हैं** (मतलब यह कि मुसलमान को जल्द तौबा कर लेनी चाहिए क्योंकि कभी-कभी फिर तौबा की तौफ़ीक़ नहीं रहती और कभी-कभी कुफ़्र तक नौबत पहुंच जाती है)(16) **अच्छी तरह जान लो कि अल्लाह तआ़ला** (की ऐसी

शान है कि वो) **ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने** (यानी सूख जाने) **के बाद ज़िन्दा** (यानी हरा भरा) **कर देता** (है बस इसी तरह तौबा से मुर्दा दिल को ज़िन्दा और ठीक कर देता) **है,** (बस मायूस न होना चाहिए क्योंकि) **हमने तुम से** (इसकी) **निशानियां** (खोल कर) **बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो(17) बेशक ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें और ये** (ख़ैरात करने वाले) **अल्लाह को सच्चे मन के साथ क़र्ज़ दे रहे हैं उस ख़ैरात** (के सवाब) **को उनके लिए बढ़ा दिया जाएगा और** (बढ़ाने के साथ) **उनके लिए इज़्ज़त का बदला है(18) और जो लोग अल्लाह पर और उसके पैग़म्बरों पर** (पूरा) **ईमान रखते हैं** (यानी दिल से ईमान के साथ हुक्मों की पाबन्दी पूरी करते हैं) **ऐसे ही लोग अपने रब के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद हैं** (यानी उन का दर्जा ऐसा है)**, उनके लिए** (जन्नत में) **उन का** (ख़ास) **बदला और** (पुल सिरात पर) **उनका** (ख़ास) **नूर होगा, और** (आगे काफ़िरों का बयान है कि) **जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुटलाया ये ही लोग दोज़ख़ी हैं(19)**

नोटः- पुल सिरात के पास अल्लाह तआला हर मोमिन को नूर देंगे और हर मुनाफ़िक़ को भी मगर जिस वक़्त ये पुल सिरात पर पहुंच जाएंगे तो मुनाफ़िक़ों का नूर छीन लिया जाएगा। और यह नूर दुनिया के नूर की तरह नहीं होगा कि उससे दूसरा भी फ़ाइदा उठा सके बल्कि जिस तरह कोई अन्धा आदमी दूसरे की आंखों की रोशनी से फ़ाइदा नहीं उठा सकता इसी तरह मोमिनों के उस नूर से कोई काफ़िर या फ़ासिक़ फ़ाइदा नहीं उठा सकेगा। (इब्ने कसीर)

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ
غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ؕ وَ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ
مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝٢٠ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ
عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٢١

आयत नं० 20 से 21

तुम अच्छी तरह जान लो कि (आख़रत के मुक़ाबिले में) **दुनिया की ज़िन्दगी** (हरगिज़ तवज्जो की चीज़ नहीं क्योंकि) **वो सिर्फ़ खेल तमाशा और** (एक दिखावे की सजावट) **और आपस में एक दूसरे पर बड़ाई जिताना** (ताक़त व हुस्न में और दुनिया के हुनर व कमाल में) **और माल और औलाद में एक का दूसरे से अपने को ज़्यादा बताना** (है यानी दुनिया की असलीयत यह है कि बचपन खेल कूद में और जवानी सिंगार व बड़प्पन में और बुढ़ापे में माल व औलाद को गिनवाना और यह सब फ़ना हो जाने वाला) **है,** (जिस की मिसाल ऐसी है) **जैसे बारिश** (का बरसना) **है कि उस की पैदावार** (खेती) **किसान को अच्छी लगती है फिर वो** (खेती) **सूख जाती है तो उस को तुम पीली देखते हो फिर वो चूरा-चूरा हो जाती** (है इसी तरह दुनिया कुछ दिनों की बहार) **है, और आख़रत** (की हालत यह है कि उस) **में** (दो चीज़ें हैं एक तो काफ़िरों के लिए) **सख़्त अज़ाब है और** (दूसरी ईमान वालों के लिए) **अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और रज़ामन्दी** (है और ये दोनो बाक़ी हैं बस आख़रत तो बाक़ी) **है, और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़** (फ़ना हो जाने वाली है जैसे मान लो कि एक) **धोके का सामान है(20)** (बस जब दुनिया फ़ना हो जाने वाली और आख़रत बाक़ी रहने वाली है जो ईमान से नसीब होती है तो तुम को चाहिए कि) **तुम अपने रब की बख़्शिश की तरफ़ दौड़ो और ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसका फैलाव आसमान और ज़मीन के फैलाव के बराबर है** (और) **वो उन लोगों के वास्ते तैयार की गई है जो अल्लाह पर और उसके पैग़म्बरों पर ईमान रखते हैं,** (और) **यह** (बख़्शिश और रज़ामन्दी) **अल्लाह की महरबानी है वो अपनी महरबानी जिसको चाहे दे, और अल्लाह बड़ी महरबानी वाला है** (यानी अपने नेक कामों पर ग़ुरूर न हो बल्कि अल्लाह की महरबानी पर नज़र रक्खे)(21)

नोटः- जन्नत की तरफ़ दौड़ने से मुराद नेक कामों में कोशिश करना है। जैसा कि हज़रत अली रज़ि० ने अपनी नसीहतों में फ़रमाया कि तुम मस्जिद में सबसे पहले जाने वाले और सब से आख़िर में निकलने वाले बनो। (रूह)

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِیْبَةٍ فِی الْاَرْضِ وَ لَا فِیْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
یَسِیْرٌ ﴿۲۲﴾ لِّكَیْلَا تَاْسَوْا عَلٰی مَا فَاتَكُمْ وَ لَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ﴿۲۳﴾ الَّذِیْنَ
یَبْخَلُوْنَ وَ یَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَ مَنْ یَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ ﴿۲۴﴾ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا

بِالْبَيِّنٰتِ وَ اَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَ اَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّ
مَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَ رُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۲۵﴾

आयत नं० 22 से 25

कोई मुसीबत जो दुनिया में आती है या ख़ास तुम्हारी जानों में वो (सब) **एक किताब** (यानी तक़दीर की किताब) **में लिखी है** (उस वक़्त से) **जब कि हमने उन जानों को पैदा भी नहीं किया** (था यानी लोगों को पैदा करने से पहले ही तक़दीर की किताब में सब कुछ लिख दिया) **था,** (और होने से पहले किताब में लिख देना) **यह अल्लाह के नज़दीक आसान काम है(22)** (और हमने यह बात इसलिए बता दी है) **ताकि जो चीज़ तुम से जाती रहे** (माल औलाद या तन्दरूस्ती) **तुम उस पर** (ज़्यादा) **ग़म न करो** (कि दीन के कामों में रूकावट बन जाए) **और ताकि जो चीज़ तुम को दी है** (उसके बारे में ये ही समझ कर कि अल्लाह तआला ने अपनी महरबानी से हम को दी है) **उस पर इतराओ नहीं, और अल्लाह किसी इतराने वाले शेख़ीबाज़ को पसन्द नहीं करता(23)** (आगे कन्जूसी की बुराई है कि) **जो ऐसे हैं कि** (दुनिया की मुहब्बत की वजह से) **ख़ुद भी** (अल्लाह को पसन्द बातों में ख़र्च करने से) **कन्जूसी करते हैं** (चाहे अपनी मनचाही बातों व गुनाहों में कितना ही ख़र्च करें) **और** (यह गुनाह भी करते हैं कि) **दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं, और** (ये ही दुनिया की मुहब्बत कभी दीन से भी हटा देती है जिसके बारे में यह धमकी है कि) **जो आदमी** (सच्चे दीन से) **मुंह मोड़ेगा तो अल्लाह तआला** (का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि उस) **को किसी** (के मालों और इबादत) **की ज़रूरत नहीं** (और) **वो** (ख़ुद अपनी ज़ात में) **तारीफ़ के क़ाबिल है(24) हमने** (इसी आख़रत के सुधार के लिए) **अपने पैग़म्बरों को खुली निशानियां देकर भेजा और हमने उनके साथ किताब को और** (उस किताब में ख़ास कर) **इन्साफ़ करने** (के हुक्म) **को उतारा ताकि लोग** (अल्लाह और बन्दों के हक़ों के बारे में) **इन्साफ़ पर रहें** (इसमें सारी शरीअत आ गई)**, और हमने लोहे को पैदा किया है जिसमें सख़्त रौब** (रक्खा) **है** (ताकि इससे दुनिया का इन्तिज़ाम ठीक रहे कि डर से बहुत सी बुराइयां दूर होती हैं) **और लोगों के दूसरे फ़ाइदे भी हैं** (जैसे बहुत से औज़ार लोहे से बनते हैं) **और** (इस लिए लोहा पैदा किया) **ताकि अल्लाह तआला** (खुले तौर पर) **जान ले कि** (उस अल्लाह को) **बेदेखे उस की और उसके पैग़म्बरों की** (यानी दीन की) **कौन मदद करता** (है क्योंकि जिहाद में भी काम आता है तो यह भी आख़रत का नफ़ा) **है,** (और जिहाद का हुक्म इस लिए नहीं कि अल्लाह तआला उस का मुहताज है क्योंकि) **अल्लाह तआला**

(ख़ुद) **ज़बरदस्त ताक़त वाला** (है बल्कि तुम्हारे सवाब के लिए) **है**(25)।

नोटः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि हर इन्सान अपनी फ़ितरत से कुछ चीज़ों से ख़ुश होता है कुछ से दुखी। लेकिन होना यह चाहिए कि जिस को कोई मुसीबत पेश आए वो उस पर सब्र करके आख़रत का सवाब कमाए। और जो कोई आराम व ख़ुशी पेश आए वो उस पर शुक्र गुज़ार होकर सवाब हासिल करे। (हाकिम)

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ جَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَ الْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ
فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ قَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَ اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ۬ وَ جَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ
الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّ رَحْمَةً ؕ وَ رَهْبَانِيَّةَ ِۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا
حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

आयत नं० 26 से 29

और हमने (लोगों के इसी आख़रत के सुधार के लिए) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **और इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **को पैग़म्बर बनाकर भेजा और हमने उनकी औलाद में पैग़म्बरी और किताब जारी रक्खी** (यानी उनकी औलाद में भी कुछ पैग़म्बर और उनमें से कुछ किताब वाले पैग़म्बर बनाए) **तो** (जिन लोगों के पास ये पैग़म्बर आए) **उन लोगों में से कुछ तो सीधे रास्ते पर आए और बहुत से उनमें कहना मानने वाले न थे।**(26) **फिर उनके बाद और पैग़म्बरों को एक के बाद दूसरे भेजते रहे** (जैसे मूसा अलैहिस्सलाम के बाद तौरेत के हुक्मों की पाबन्दी कराने के लिए बहुत से पैग़म्बर आए) **और उनके बाद** (फिर शरीअत के साथ) **मरयम के बेटे ईसा** (अलैहिस्सलाम) **को भेजा और हमने उन को इन्जील दी और** (उनकी उम्मत में दो क़िस्म के लोग हुए एक उनका कहना मानने वाले यानी उन पर ईमान लाने वाले और दूसरे इनकार करने वाले और) **जिन लोगों ने उनका कहना माना** (यानी पहली क़िस्म के लोग) **हमने उनके दिलों में** (एक दूसरे के साथ) **हमदर्दी और रहम दिली पैदा कर दी, और** (हमारी तरफ़ से तो उन लोगों को सिर्फ़ हुक्मों पर चलने का हुक्म

हुआ था लेकिन उनमें कुछ वो हुए कि) **उन्होंने रहबानियत** (यानी दुनिया को छोड़ कर जोगी बन जाने के तरीक़े) **की ख़ुद नई बात निकाली** (इरादा तो यह था कि जब लोगों के बीच रह कर शरीअत पर चलना मुश्किल हो रहा है तो दुनिया से बिल्कुल अलग होकर एक तरफ़ इबादत करेंगे) **हमने उन पर इस को वाजिब न किया था लेकिन उन्होंने अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के वास्ते** (अपने दीन को बचाए रखने के लिए) **इसको अपना लिया था तो** (फिर उन राहिबों यानी जोगियों में ज़्यादा वो हुए कि) **उन्होंने उस** (रहबानियत) **को पूरी तरह न निबाहा** (यानी सूरत तो राहिबों की बना ली और अपनी मनमर्ज़ी की बातों पर चलते रहे)**, तो** (उन राहिबों में जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में हुए उन पर ज़रूरी था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाएं तो) **उनमें से जो** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर) **ईमान लाए हमने उनको उन का सवाब** (वादा किया हुआ) **दिया** (मगर ऐसे कम थे) **और ज़्यादा उनमें नाफ़रमान हैं** (कि आप पर ईमान नहीं लाए)(27) **ऐ** (ईसा अलैहिस्सलाम पर) **ईमान रखने वालो तुम अल्लाह से डरो और उसके रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर ईमान ले आओ अल्लाह तआ़ला तुम को अपनी रहमत से** (सवाब के) **दो हिस्से देगा और तुम को ऐसा नूर देगा कि तुम उसको लिए हुए चलते फिरते होंगे** (यानी ऐसा ईमान देगा जो हर वक़्त साथी रहेगा यहां से पुल सिरात तक) **और तुम को बख़्श देगा** (क्योंकि इस्लाम लाने से कुफ़्र के दिनों के सब गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं)**, और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बहुत महरबान है**(28) (और ये दौलतें तुम को इसलिए देगा) **ताकि** (क़ियामत के दिन) **किताब वालों को** (यानी जो ईमान नहीं लाए उनको) **यह बात मालूम हो जाए कि वो लोग अल्लाह की महरबानी के किसी हिस्से को** (बिना ईमान लाए) **पा नहीं सकते और** (यह भी मालूम हो जाए कि) **महरबानी अल्लाह के हाथ में है वो जिसको चाहे देदे** (बस मुसलमानों को चाहा तो उन्हीं को दी)**, और अल्लाह तआ़ला बड़ी महरबानी वाले** (हैं मतलब यह कि उनका ग़रूर टूट जाए कि वो इस हालत में भी अपने को महरबानी और बख़शिश का हक़दार समझते) **हैं**(29)।

नोटः- ऊपर आयत से मालूम हो गया कि किताब वाले जो सिर्फ़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर तो ईमान रक्खें मगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान न रक्खें इस हालत में वो अल्लाह की किसी महरबानी के हक़दार नहीं जब तक आख़री नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान न ले आएं।